गुड़ा-खुद्दीक रोटी

गुड़ा-खुद्दीक रोटी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

GURA-KHUDDIK ROTI (गुड़ा-खुद्दीक रोटी)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-03-2
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2015)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्री अजय कुमार गुप्ता, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक

ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार

संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

डकरा हाल

दिन-राति खेतीक उन्नैतक समाचार रेडियो-अखबारमे सुनि-पढ़ि अपनो मन उमकल जे जखन खेत अपने अछि तखन पथार किए ने लागत?

जखन एकटा आमक गाछ फड़ि कऽ निच्चाँमे पथार लगा दइए तखन चारि बिघा खेत कम भेल? तहूमे दू क्विन्टल-अढ़ाइ क्विन्टल कट्ठा धान उपजत।

एक तँ ओहिना पचीस-तीस रुपैए किलो माने पचीस-तीस साए रुपैए क्विन्टल चाउर बिकाइए, तैपर अस्सी कट्ठाक उपजा भेल। मने-मन हिसाब जोड़लौं जे जखन अपन देशी टेकनिकमे एते हएत, तखन जँ जपानी टेकनिकक देखसी करी तँ आरो केते बर बेसी हएत।

एक दिस खेतक सीमा दऽ उपजा जोड़ी तँ बुझि पड़ए जे जहिना नवका-नवका बैंकक एजेन्ट गुना-भाग करैत तीने बरिसमे लीखकेँ लाख आ कौड़ीकेँ करोड़ बना दइए तहिना बुझि पड़ल। मने-मन गुड़-चाउर फाँकऽ लगलौं।

पौरु साल मधुबनी गेल रही। गिरहस्ती करिते छी। बीआ-बालिक दोकानपर गेलौं, तँ रंग-बिरंगक बीआ-बाइलपर नजैर गेल तँ देखलिऐ। देखिते दोकानदारकेँ पुछलिऐ-

“सभसँ नीक उपज होइबला धानक कोन बीआ अछि?”

एके-दुइए केतेको फॉर्मक बीआ देखबैत दोकानदार कहलक-

“सभसँ नीक बीआ ई अछि।”

प्लास्टिक झोरामे किलो भरि-भरिक बीआक थैली बनल। झोरा तरमे बीआक रंगत की रहै से तँ ऊपरसँ नइ बुझि पड़ैत रहए मुदा ऊपरमे जे लिखल रहै, ओ खूब ललटगरसँ। ललटगर देखि अपनो मन मानि गेल जे बीआ नीक अछि। डेढ़ साए रुपैए किलोक दरसँ एक पैकेट बीआ कीनि लेलौं।

गामक बाटमे जखन अबैत रही तखन वएह बीआ, वएह खेत, वएह गिरहस्ती मनमे घुरियए लगल तइसँ कोटक जे काज कऽ कऽ घुमल रही सेहो बिसैर गेलौं। ओना कोटोक काज केनहि आएल रही, मुदा से सभ मनमे नइ रहल, सोलहन्नी हेरा गेल।

मनमे उठल, एते दामी बीआ अछि, ओना एके किलोसँ दस कट्ठा अबाद हएत, तइ हिसाबे बहुत महग नइ भेल। मुदा ऐसँ पहिने एते महग ने कहियो सुनने छेलौं आ ने कीनने छेलौं, तइ हिसाबे तँ महग भेबे कएल। ओहुना किलोक हिसाबसँ कट्ठा धानक खेती होइते अछि। ओ चाहे बौगहा धान हुअए आकि बौगहा बीआ, दुनूक हिसाब एक्के अछि। तेतबे नइ दोकानदारोक मुहेँ आ रेडियोमे सुनिते छी संगे पत्रो-पत्रिकादिमे पढ़िते छी तँए अबिसवासक कोनो अँकुरे ने मनमे अँकुरल।

बीआक विश्वसनीयतापर मन आगू बहटल। जेना एकेठाम एके गाछीमे एकटा आमक गाछ हौउ आ दोसर कोनो आन फलक, तैठाम तँ एहेन होइते अछि जे एकटा फलक गाछ देखैत-देखैत दोसरोपर नजैर चलि जाइए, तहिना मनमे भेल जे आनो किसान सभकेँ कहिऐन आकि नइ कहिऐन?

भदवारिमे जहिना अधिक पानि रहने यत्र-कुत्र धारा बनि धार बहऽ लगैए तहिना मनमे बहऽ लगल। बहऽ ई लगल जे मर्दगानी तँ

ओइठाम होएत जैठाम लोक बिनु ढोल पीटने काज करैत देखबैए। मुदा लगले भेल जे जे समाजक गति-विधि अछि तइमे तँ जाबे चुपचाप काजकेँ नइ संचालित करब ताबे तँ आने छरैप-छरैप आबि आगूमे कुदैत रहत। तखन तँ अपने पछुआएलक पछुआएले रहब?

हँ-निहँस किछु काइये ने पबैत रही। साइकिलक झमार फुटे आ मनक झमार फुटे झमारैत रहए। मन घोर भऽ गेल। मुदा कनियेँ आगू बढ़लौं कि ओही घोर मनमे घीक मट्ठा बनऽ लगल। मट्ठा बनिते भेल जे जँ आनो-आन किसानकेँ कहबैन आ कहीं ओहो बुझि कऽ करता तँ आरो बेसी नीक हएत किने? गामक उपज बढ़त, किसानक दशामे सुधारो औत। तइमे हमर नोकसाने की हएत। ऐसँ तँ गामक उपजे बढ़त किने?

किछु समय तँ निर्णये ने कऽ पेलौं जे लोकोकेँ कहिऐ आकि नइ कहिऐ। मुदा से भेल नहि, एके-दुइये बीआवान भऽ गेल। तेसरे दिन सुनलौं जे दस-बारह गोरे मधुबनीसँ बीआ मंगा लेलैन।

मनमे थोड़े आफियत भेल। आफियत ई भेल जे खेतीमे जे समचाक जरूरत होइ छै- माने दवाइ छिटैक यंत्र, पानिक यंत्र, खेत जोतैक यंत्र इत्यादि- तहूमे सुविधा हएत।

ने अपना बोरिंग अछि आ ने जइ बाधमे खेत अछि तइमे आनोकेँ छैन। मुदा लाखो बोरिंगक बोरिंग अकासे छी, जँ समधानि कऽ एक दिन बरिस जाए तँ ओते पानि पुरबैमे बोरिंगकेँ केता दिन लागत। संजोगो नीक भेल जे अगते जेठुआ बरखा भेने बीआ पाड़ैक गर लगि गेल। किलो भरि बीआ अछि जे अदहे धुरमे ने पाड़ल जाएत, भेल तँ डेढ़ डेग खेत तैयार करैक अछि, तहूमे नीक बरखा भेने खेतो हल्लुके भऽ गेल अछि। बरखा परहक भिनसुरका समय, काजो करैमे नीक लागल। बीआ पाड़ि खुशीसँ बीआक अँकुरैक बाट

तकऽ लगलौं।

बीआ तँ पाड़ि देलिऐ मुदा हालक हाल बुझले ने रहए। जे पछाइत बुझलौं। जँ एको रंग बरखा जाड़ो, गर्मियोँ आ बरसातोमे होइ तँ की जमीनमे एके-रंग नमी बनत? गरमीमे जरल जमीनक नमी रहै छै, जाड़मे शीताएलक नमी रहै छै आ भदवारिक नमी अलग रहै छै जइसँ तीनूमे अकास-पतालक अन्तर हेबे करत किने। खाएर जे से, बीआ-अँकुरैक बाट ताकए लगलौं।

अपन हिसाब बुझल रहए जे छबे सूइया नबे गाछ होइ छै। मुदा तइसँ दू दिन पहिने भऽ गेल! कोदारिक पाड़ल बीआ कोनो बेसी तर चलि गेल आ कोनो ऊपरेमे रहल। किछु नमीसँ मारल गेल, किछु सुखने- माने ऊपर रहने- मारल गेल। बीआ जनमल तिलौर। कहुना कऽ एक कट्ठा खेत रोपलौं। तइमे एकटा आरो भेल। भेल ई जे रोपैमे सेहो गलती भेल। एकटा गाछक जगह दूटा-तीनटा रोपा गेल। दस कट्ठा खेती एक कट्ठामे पहुँच गेल, मनमे कनी कुवाथ भेबे कएल। जहिना आन धान भेल तहिना ओहो भेल।

तीन मास पूर्व लाल भाय अपन सेवा निवृत्तिक चिट्ठी नेने गाम आबि गेला। ओना लाल भाय जिले भरिक क्षेत्रमे नोकरीक जिनगी बितौलैन, मुदा नोकरी दुआरे खेत-पथार रहितो खेती नइ कऽ पबै छला। अठबारे सभ दिन गाम अबैत रहला तैसंग छुट्टियो-छाटी गामेमे बितौलैन मुदा खेत बटाइ लगा देलैन, अपने खेती भीर नइ एला। ओना परिवारो सभ दिन गामेमे रहलैन मुदा नोकरिहाराक बेटी-पत्नी भेलखिन किने, जिनका खेती-पथारीसँ कहियो सम्बन्ध नहि रहलैन तँए सभ खेती बटाइये रहलैन।

चारि बर्ख नोकरी लाल भायकेँ आरो बँचल छेलैन, मुदा अपने विचारसँ वोलेन्ट्री रिटारमेन्ट लऽ लेलैन, ओना सेवा निवृत्ति अपन

सोलहन्नी विचारसँ नइ भेल छला, अफसरक बेतुकार झिझक सुनि मनमे दुख भेलैन, जे दुख मने-मन एते बढ़ि गेलैन जे सेवा निवृत्तिक लेल संकल्पित भऽ गेला। जइसँ तेसरे दिन आवेदन दऽ अपनाकेँ छुट्टी कऽ लेलैन। गाम अबिते जहिना अपने बोरिंग गरौलैन, दमकल लेलैन तहिना गामोक केते गोरेकेँ उचाढ़ि चढ़ा दसटा बोरिंग आ चारिटा दमकल कीनबा देलखिन...।

..वएह लाल भाय तीन किलो धानक बीआबला झोरा नेने पहुँचला। दरबज्जेपर रही, आइ-काल्हि गाममे जेमहर-तेमहर लाले भाइक चर्च चलिते छैन, चर्चित छथिए। अखन दरबज्जापर सद्य: लाल भाय एकटा झोरा नेने स्वयं पहुँचल छैथ। मनमे खुशी भेल।

.. देखिते प्रणाम केलिऐन आ बाँहि पकड़ने चौकीपर बैसबैत पुछि देलिऐन-

“भाय, झोड़ामे कोन परसादी रखने छी?”

परसादी सुनि लाल भाय ठहाका मारलैन। हँसोर लोक सभ दिनसँ लाल भाय रहला। हँसोरेटा नइ रहला सबरसिया कहियौ कि गपरसिया कहियौ आकि बतरसिया कहियौ, सेहो रहबे केलाह।

सबरंगिया हँसी लाल भाय हँसैत रहैथ, मुदा अपना कोनो गरे ने लगए। जे संगे हँसब आकि किछु पुछबैन। हँसियो तँ अनलोकियो होइए आ सबलोकियो होइए वा दसलोकियो कहियौ सेहो होइए। जे सझिया होइए। मुदा ऐठाम लाल भाय परसादी बिलहऽ आएल छैथ, हम लेबाल भेलौं। लेबाल-देबाल सोझहा-सोझही ठाढ़ छी, तँए हँसब केना? मुदा लगले मनमे एकटा जुगुत फुरल। जुगुत ई जे किए ने चाह पीबैक बहाना ठाढ़ कऽ दिऐन आ अपन पैछला सालक धानक खेती सुना दिऐन। ओहो तँ सभ दिन सरकारीए खेतीक विभागमे रहला। सएह केलौं। उठि कऽ आँगन जा चाह बनबऽ पत्नीकेँ

कहलयैन।

जेना लालो भाय दरबज्जापर सँ सुनिते रहैथ, ठिकिया कऽ दरबज्जेपर सँ शब्दवाण फेकलैन-

“कनियाँ, चाहेटा नइ बनाएब, भानसो बनाएब।”

कहि चुप भऽ गेला, हम ओसारपर ठाढ़ रही। आँगन दिससँ के ओइ शब्दवाणक जवाब देतैन? हम किए बाजू, पत्नी भावोए भेलखिन। मुदा एकदिसिया गोलबाहि-बोलबाहि लाल भाय करैत दोहरा कऽ फेकलैन-

“कनियाँ, हम कोनो बड़ खाधुर लोक नइ छी, जे मांगि-चांगि खाइ छी, अपन बापक करजा अपना हाथे उतारब।”

‘बापक करजा सुनि’ पत्नी ऊपर-निच्चाँ ताकऽ लगली, हमरो कोनो अरथे ने लगल जे आँखियो आँखि सिखा दीतिऐन। खाली रणभूमि देखि एकदिसिया लाल भाय फेर शब्दक तीर मारलैन-

“रामकिसुन छोट भाय छी, जेकर अहाँ पत्नी छिऐ। अपनासँ ऊपरका सीढ़ीक सराधक भोज आ अपनासँ नीचला सीढ़ीक बिआहक भोज लिखैमे की ब्रह्मा हमर बेइमानी केने छैथ जे बरियाती नइ जा भेल, एकर माने हमर भोज कटि गेल?”

लाल भाइक बातक छाँह-छुँह किछु बुझबो केलौं आ किछु नहियोँ बुझलौं। मुदा मनमे भेल जे केतेकालसँ चाहक बहाना बना आँगनमे रहब, से नइ तँ आँगनक गप सुनब छोड़ि दरबज्जापर जाय। लाल भाय मने-मन कहिते हेता ने जे रामकिसुन मौगियाह अछि। सदिकाल अँगनेमे रहैए।

जाबे आँगनसँ घुमी-घुमी कि तैबीच लाल भाय अपन शब्दवाणक बौछार छोड़ि चुकल छला। दरबज्जापर अबिते देखलयैन जे लाल भाइक मुँहक हँसी बदैल गेल छैन। ओना मुँहक खिलमे

कमी नइ भेल रहैन, मुदा जहिना एक फूल रहितो गुलाब रंग-रंगक होइए, गुलाबे किए जे आनो-आन केतेक एहेन फूल ऐछे जे रंग-रंगक होइत अछि, तहिना ने हँसियोक फूलक रंग होइए।

चौकीपर बैसते मनमे उठल- एक दिस लाल भाय आगूक लेल धानक बीआ लऽ कऽ आएल छैथ, दोसर अपना मनक उपराग अछि, तहूमे दरबज्जापर आएल छैथ, केना कहबैन?

मुदा फेर भेल जे सरकारी कारोबारमे तँ सभ दिनसँ रहला, नइ भरपाइ करता तँ बुझाइयो तँ देबे करता किने। मुदा पुछबैन की? धानक बीआ ठकि लेलक, सेहो केना कहबैन, तहीसँ ने बीओ कम भेल, आ खेती सेहो कम भेल जइसँ उपजो कम भेल। ओना एको कट्ठा जे धान केलौं, तेकरो तँ उपज होइत, सेहो तँ नहियेँ भेल। खादो कम देने रहिऐ आ ताको-हेर कम केनहि रही। सबाल ओझरा गेल।

फेर मनमे भेल जे जँ किछु नहि कहबैन तखन अपन मनक संताप केना मेटाएत आकि कमत? पुछलयैन-

“लाल भाय, पैछला सालक खेतीक गप छी, ताबे अहाँ नोकरीए रही, से एकटा बात पुछै छी...।”

‘पुछै छी’मे, लाल भाय की बुझलैन से तँ ओ जानैथ मुदा जेना अपन बातक विचार करबसँ हमरे बात बुझब जरूरी बुझलैन। बजला-

“एकेटा बात किए पुछबह, एक हजार पुछह। मुदा तैबीचमे एकटा अधखड़ुआ बात रहि गेल अछि तेकरा पहिने पुरा लिअ दाए।”

चिड़ै जकाँ मुँहक बोल लाल भाय लूझि लेलैन! केना कहितिऐन जे पहिने हमरे बात सुनू। टोकारा दैत कहलयैन-

“अच्छा तँ पहिने अधखड़ुए बात पुरा लिअ भाय। कोनो कि

बाढ़ि अबै छै जे दहा-भँसिया जाएब। तखन तँ कनी डर ऐछे जे बीचमे कहीं अपन बात ने बिसैर जाइ।"

'बिसरब' सुनि लाल भाइक मन मानि गेलैन जे एहेन होइते छै। बहुत लोककेँ देखै छिऐ जे बजैकाल बजैबला बात बिसैर जाइए आ दोसरे-तेसरे बात तोपि दइ छै। नीक हएत जे अपन बात कहला पछाइत तगेदा कऽ देबै जे आब तूँ अपन बात बाजह, केतबो बिसरभोरमे वौआएत तैयो तँ भोरका समय रहै छै किने, नइ मुँह तँ नाँगैरो पकड़ेबे करत...।

लाल भाय बजला-

"बौआ रामकिसुन, तोरा मनमे जरूर तकलीफ भेल हेतह जे लालभाय बिआहमे बरियाती नइ गेला। मनमे रंग-बिरंगक बात-विचार उठैत हेतह। जेना देखै छहक जे मुँहगर-कन्हगर लोककेँ बरियाती लऽ जा बिआहकेँ भारी-भरकम बना दइए।"

लाल भाइक विचारक बहैत धारमे हमहूँ भँसि गेलौं। कहलयैन-

"भने अपना मुहेँ कहि देलौं भाय, नइ ते कहियो ने कहियो मुहेँपर बजा जाइत जइसँ आरो बेसी मरखाह भऽ जाइत।"

हमर बात लाल भाइक मनकेँ छुलकैन। छुबबो केते रंगक होइए, सकारात्मको होइए आ नकारात्मको होइए। फेर सकारात्मकोमे केते रंगक नकारात्मको आ नाकारात्मकोमे केते रंगक सकारात्मको होइए। एक 'छुबक'क माने 'घर करब' चाहे 'पकड़ब' होइत अछि आ दोसर होइत अछि 'क्रोध ठाढ़ करब', 'झड़कब'।

मुदा एतए से नइ, लाल भाइक मनमे तरका गदगरी रहैन। माने मनक भीतरसँ नोकरीक जिनगीकेँ सोलहन्नी कात करब रहैन। ओना

सोल्होअना हटौलासँ केते उपयोगी काज सेहो हटि जइतैन, मुदा से नै हटल छेलैन। मनमे खुशी ई रहैन जे मुहाँ-मुहीं कोनो बात करब आकि विचार करब बेसी नीक होइए। तँए अपना बातकेँ खोलैत बजला-

"बौआ रामकिसुन, जइ दिन तोहर बिआह रहह, तही दिन पूसामे किसान सम्मेलन सेहो रहै, मंच परहक लोक छीहे, जँ सोझहे जाएब रहितए तखन तँ कनछी मारि निकैल जइतौं मुदा से नइ भेल, तोरा बिआहसँ बेसी लाभक काज अपनो बुझि पड़ल। किएक तँ तोहर बेकतीगत काज छेलह आ ओ सार्वजनिक रहए जे समाजक भेल। तोरा बरियातीकेँ टारलो जा सकै छल मुदा ओकरा टारब उचित नइ होइत। अखने ससुरकेँ समाद पठा दहुन जे एकटा बरियाती अखैन तक नतले रहि गेल छैथ, से जहिया बीझो कराबी। पहुँच जाएब।"

लाल भाइक फर्ज व्यान सुनिते मन भरि गेल, मुदा कनछी मारबकेँ नै बुझि पुछि देलिऐन-

"की कनछी मारि कहलिऐ?

"सरकारी विभागमे दू रंगक लोक छैथ, एकटा जे काजो करै छैथ आ मंचपर चढ़ि अपन विचारक आदानो-प्रदान करै छैथ, दोसर छैथ जे ऑफिसर बनि बैसल रहै छैथ। अखन ई सभ छोड़ह पहिने धानक बीआक गप करह।"

बीआक नाओं सुनि कहलयैन-

"लाल भाय, पौरुका बीआ पाड़लौं, से जनमैमे तिलौर भऽ गेल?"

'तिलौर' सुनिते लाल भाय बजला-

"रामकिसुन, अपना सभकेँ खेती करैले माटि- माटिक गुण,

पानि- पानिक गुण सभ बुझऽ पड़त। आब गाम एलौं हेन, समैनुसार बात-विचार करिते रहब। आगूओ गप-सप्प होइत रहत, मुदा अखन एतबे बुझि लएह जे खेतमे हालक दुआरे बीआ तिलौर भेलह, ओना तामो-कोरसँ एना होइए। मुदा अखन हालक बात कहै छिअ। गरमीक समयमे जमीनक हाल तेजीसँ घटै छै। जइसँ जेते नमीक जरूरत बीजकेँ अछि, ओइमे कमी भेने बीआ कम अँकुरि ऊपर आबि पबैए।"

लाल भाइक विचार मनमे गरल। दोहरबैत पुछलयैन- "लाल भाय, बीआक अँकुरन लेल केहेन हाल चाही?"

लाल भाय बजला- "ओइले डकरा हाल चाही।"

पुछलयैन-

"डकरा हाल की भेल?"

कहलैन-

"डकरा हाल ओ हाल चाहे नमी भेल जे शत-प्रतिशत बीजकेँ अँकुरा ऊपर दिस बढ़ा दइए। संगे माटिमे बीआ सड़ैक सम्भावना सेहो क्षीण रहैए। ओना हर बीजक अपन-अपन अँकुरैक परिस्थिति होइ छै तेतबे नइ मौसमक हिसाबसँ डकरो हालक परिस्थिति बदलैत रहैए।"

चाह आबि गेल, दुनू भैयारी चाह पीबए लगलौं। अपना मनमे हुअए जे चाह केहेन भेल केहेन नहि..?

फेर मनमे उठल- चाहोक भोज कोनो कि आब सस्ता-सुभिस्ता थोड़े रहल। डायविटीजबला कहता चिन्नी छोड़ि कऽ पीब, कियो कहता जे चीनी कनी बेसी पीब, तँ कियो कहता जे कम पीबै छी। तहिना लीकरोक सम्बन्धमे अछिए। सभसँ नमहर बाँतर ई अछि जे कियो कहता जे हम लोहा महींसक दूधक चाह नइ पीबै छी। केना

लोक चाहोक भोज करत?

मुदा गोसाँइ उगैत जहिना दिन चढ़ऽ लगैए चाहे दुधिया भाँग पीला पछाइत चाह पीलासँ बिजली-कनेक्शन जकाँ तार जोड़ाइते भुक दऽ इजोत होइए, तहिना लाल भायकेँ भेलैन। बजला- “बौआ, जिनगीसँ बेचैनी हटा लेलौं।”

लाल भाइक उटपटाँग बात सुनि किछु अरथे ने लगल, एक दिस देखै-सुनै छी जे गाममे उचाढ़ि चढ़ा देलखिन अछि आ दोसर दिस कहै छैथ बेचैनी हटा चैनी भऽ गेलौं। एना केना भेल? पुछैत कहलयैन- “भाय! गाममे आगियो पजारि देलिऐ हेन आ दोसर दिस निचेनियोँ तकै छिऐ?”

हमर बात जेना लाल भाइक छातीकेँ छुलकैन। विस्मित होइत बजला- “बौआ रामकिसुन, गाम तेना ने सभ दिन आकर्षित केने रहल जे कहियो छोड़ैक मन नइ भेल। मुदा छुटि गेल!”

कहलयैन- “अहाँ ते सभ दिन जिले भरिमे दौड़-बरहा करैत रहलौं, अठवारे गामो अबिते रहलौं, तखन केना गाम छुटि गेल?”

दहलाइत छातीक धार जेना लाल भायकेँ बहबऽ लगलैन। बजला-

“पत्नी दुआरे नोकरी करए पड़ल, नइ तँ हमरा कोनो नोकरीक खगता रहए, अपन खेती-पथारी छेलए, आइ अपन सखारी-पेटारीमे अपन जिनगी देखैत चलितौं।”

पत्नीकेँ दोख देखि पुछलयैन- “पत्नी दुआरे किए नोकरी करए पड़ल?”

हमर बात सुनि लाल भाय गुम भऽ गेला। एक दिस दुनू बेकतीक प्रेमकथा, दोसर दिस अपनासँ छोट लग केना बाजब? मुदा आब तँ चुपो नइ रहल जा सकैए? पाकल आम जकाँ आगूएमे

सबाल खसि पड़ल अछि!

मुदा लगले जेना लाल भाइक मन उनैट गेलैन। उनैट ई गेलैन, जे हमरा सन गल्ती आनोकेँ हएत, तँए बाजबे उचित? बजला-

“कौलेजमे जखन रही तखन बजरूआ परिवारक भाँजमे अपने गल्तीसँ पड़ि गेलौं, पिताक विचारक विपरीत अपना विचारे बिआह कऽ लेलौं।”

मुस्की दैत कहलयैन- “आब ते सरकारो ‘लव मैरिज’केँ प्रोत्साहन दइए तखन अहाँ अधले की केलिऐ?”

गम्भीर होइत लाल भाय बजला-

“पैछला शताब्दीक सातम-आठम दसकक बीच, जखन कौलेजमे पढ़ैत रही, बाबू गिरहस्ती करै छला, मधुबनीसँ साकेत आ सीता धानक बीआ आनि कऽ देलिऐन। समैयो नीक पकड़ेलैन, एक क्विन्टल चालीस किलो कट्ठा धान भेल छेलैन। नव जागृति देखि पिताजी खूब खुशी भेला। तहिना जँ पत्नियोँ ओहन किसान परिवारक रहितैथ, जे खेती-पथारीकेँ जीवन बुझि आएल रहितैथ तँ ओ जरूर अपन खेत-पथार देखि कहितैथ ने जे सौनमे किए घर छोड़ब?”

कहि उठि कऽ ठाढ़ भऽ आगू बढ़ैत कहलैन-

“आब गाम आबिए गेलौं, निचेनसँ आरो गपो-सप्प आ खेतीओ-पथारी होइत रहत।”



शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015

जेतए जे हौउ

जेठुआ धारक अमार जकाँ गामे-गाम अमार चढ़ल अछि। मुदा धारक अमार आ गामक अमार एक शब्द रहितो काजे दू अछि। धारक अमारमे एक रंगक माछक अमार चढ़ै छै, जइमे जे जेहेन सचरगर से तेहेन छाइन अनैए। मुदा गाम-समाज तँ से नइ छी, गामोमे गाम अछि आ समाजोमे समाज अछिए। किछु अछि तँ अछि, मुदा अमार तँ गाममे चढ़बे कएल अछि। जँ से नइ अछि तँ एते असथल केना बढ़ि रहल अछि आ जेते असथल बढ़ि रहल अछि तेते रंगक धुजो-पताका तँ बैढ़े रहल अछि। ई दिगर भेल जे केतौ धुजाक उखड़ा-उखड़ी भऽ रहल अछि, तँ केतौ चानन-टीकाक।

मुदा एक-डँरिया टीका तीन-डँरिया होइत आब सत-डँरिया तक पहुँच रहल अछि।

गामे-गाम, टोले-टोल जातिये-जाति जखन भइये रहल अछि तखन चुपचाप अनकर मुँह देखैत रही, सेहो नीक नइ बुझि पड़ल। नीक नइ बुझि पड़ैक कारण भेल जे गामक चारि गोरे, एकतुरिया रहने एक्के स्कूलमे नाओं लिखेलौं। चारू संगतुरिया रहने एके किलास होइत पढ़बो केलौं आ संगे चारू गोरे पासो केलौं मुदा ओकरा सबहक लहैको आ चलो-चलती देखि अपनो मन सुरसुरए लगल।

ओना कहैले तँ लोक घरो बैसल बीए-एमेक डिग्री चुपेचाप कीनि लइए मुदा हमरा चारू संगीक बीच से नइ अछि। गाममे जे

मिडिल स्कूल तक पढ़ि पास केलौं से सर्टिफिकेट चारू गोरेकेँ अछि। हम मायाजालमे पड़ि गिरहस्तीक करैत सेवकाइ करै छी आ ओ तीनू गोरे बबाजी बनि महंथाइ करैए। एकतुरिया, एक इस्कुलिया रहितो चारू चारि दिसक बाट धेने छी- कहैले ओहो तीनू गोरे बबाजीए अछि मुदा तीनू तीन-दिसिया अछिए।

एक संगीक मनमे महात्मा बनैक उखमज उठलैन, तँए अपन विवाहित स्त्रीकेँ दोसर हाथे बिआह करा घर छोड़ि निकैल गेला। घरेटा नइ छोड़लैन, घरोवालीकेँ छोड़लैन आ घरेवालीटा किए कहल जेतै जे घरक अन्नो छोड़लैन! अल्हुआ, सुथनी, सजमैन, कदीमा, अल्लू उसैन-उसैन खाइत-पीबैत आइ ओ अखरोट-पिस्ता, सेव-नारंगीपर पहुँच गेल छैथ।

दोसर संगी जे छला ओ महात्मा बनैक खियालसँ नहि, पत्नीक संग छुटि गेने मजबूरीमे बबाजी भेला। केश-दाढ़ी बढ़ा रमता बनि गेला। गाम-घरक भनडारा पुरैत, देशोटन आ तीर्थोटन करए लगला।

मुदा किछुए सालक पछाइत भाग्य जगलैन। सेवकाइसँ महंथाइक प्रमोशनो भेलैन आ हेरेलहा पत्नीक बदला दोसर पत्नियोँ हाथ लगलैन। अनुकूल मौसम रहने दोसर संगीकेँ चारू दिसक उन्नैतो समतूले छैन। जेहेन नीक वक्ता तेहेन देहो-दशा, तँए मंचक महन्थ तँ छथिए। जइसँ सरकारीए अफसर जकाँ उन्नैत सेहो भइये रहल छैन।

तेसर संगी जे छैथ, हुनका अपन मननुकूल पत्नी नहि भेने जिनगीमे खिन्नता एलैन, जइसँ ओहो बबाजी बनि सेवकाइसँ आगू बढ़ि आब महंथाइमे पहुँच गेल छैथ। चारू संगीमे चेहरा-मोहरा सेहो आन सभसँ नीक छैन्हें चलो-चलती तहिना लहटगर छैन्हें। पहिने तीन-मसुआ रमता बनला। माने सालक नअ मास खेती-पथारी करै छला आ तीन मास रमै छला। मुदा समैयक लहकीमे लहैकते

गिरहस्तीक समय घटऽ लगलैन आ रमता-रमती बढ़ऽ लगलैन। तइसँ परो-परिचय आ दैछनोमे अगहनीक लड़ती-चड़ती आबिये गेल छैन। नीक आमदनी नीक जिनगी बना सूदिया महन्थ सेहो बनियेँ गेल छैथ।

एक जातिक भीतर धुजा-पताकाक स्थान पबैले जहिना मारि-पीटि, तहिना गारि-गरौबैल चलिते अछि आ तहिना गामक भीतर जातिक धुजा-पताका-ले सेहो मारि-पीटि, गारि-गरौबैल, दिन-दिनक चर्या बनि गेल अछि। केतए जाएब, केना जाएब, केना रहब इत्यादि नमहर समस्या आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि...।

सुपारीक टूक जकाँ कटाइत गामकेँ देख, मने-मन गुन-धुन उठैत रहए जे काल्हि दिन केना जीब? ने अक चलए आ ने बक। ने आगुए इजोत देखिऐ आ ने पाछूए। चौबगली जेना अन्हारे-अन्हार बुझि पड़ैत रहए। तहीकाल हलसैत-फुलसैत पत्नी आबि कहलैन-

“काल्हि गाममे बड़का भनडारा छी, महंथाइ बनत, बाबन मण्डलीक महंथ उतरता।”

कहि चुप भऽ गेली। मनमे उठल- पहिने दू महंथाइ छल, पछाइत तीन गमैया महंथ बढ़ने पाँच भेल। बढ़बो केना ने करत, जखन बहरवैया गामक महंथकेँ मानि नेने छैन, सेवकान सेवकाइ काइम भऽ गेल छैन, तखन जँ गाममे घराड़ियो ने रहैन सेहो तँ नीक नहियेँ कहल जाएत।

ओना ई बात गामक तीनू महंथ- गौरी दास, पार्वती दास आ जानकी दास- सेहो बुझलैन। जइसँ जहिना गौरी दास अपन दियादी परिवारमे चेला मुरि गाममे स्थान बनौलैन तहिना पार्वती दास टोलबैयाकेँ चेला मुरि स्थान बनौलैन। एहेन जानकीए दास छैथ, जे सूदिये कारोबारटा रखने छैथ।

ओना सालक एगारह मास तीनू महंथ गामसँ बाहरे रहै छैथ, एक मास गाममे रहै छैथ तहीमे अगहनुआँ मालिक जकाँ अपन-अपन कारोबार समेट सालो भरिक पुरती कऽ लइ छैथ।

मनमे भेल जे पत्नीकेँ आरो बात पुछयैन, मुदा ओ तँ केतौ कोनो आने अलगाक मुहेँ सुनने हेती। ओ जे कहती से बारह आनासँ बेसीए फुसि कहती। एकर माने ई नइ जे पत्नी बड़ फुसियाहि छैथ, फुसियाहाक बातपर बिसवास कऽ कहै छैथ, जे फुसियाह बात रहै छैन। मुदा पत्नीक बातक विचार नइ दिऐन, सेहो उचित नहि। तहूमे दिनका खेनाइ तेहेन खुऔने छेली जे ओहिना कण्ठ लग बैस मीठगर ढकार होइए।

पुछलयैन-

“देखलौं हेँ आकि कियो कहलक हेँ?”

अपन विचारकेँ मजगूतीसँ रखैत पत्नी बजली-

“अखैने मिरचाइ-हरदी बेचैबला वेपारी नइ जाइ छेलै वएह बाजल।”

पत्नीक बात सुनि नजैर ओइ वेपारीपर गेल। सभदिना बेचैबला वेपारी छी, दस गाम घुमैए, दस रंगक बात सुनैए, दसठाम दस गोरे लग बजैए। मुदा केकरा मुँहक बात ओ वेपारी बाजल, ईहो बुझब तँ कठिन अछिए। एक्केटा एजेन्ट दस-दस कम्पनीक एजेन्सी नेने अछि। तहूमे पहिलुका एजेन्ट अपन कम्पनीक प्रोडक्टक गुण-अवगुण बुझबैत प्रचार करै छल, आब सेहो बदैल गेल। बदैल ई गेल अछि जे लेबालक जरूरत बुझि अपन मालकेँ ओहने बना लइए, चीज जे हौउ मुदा तत्काल तँ गहिंकीकेँ पकैड़े लइए।

रंग-रंगक विचार मनमे उठए लगल। मुदा सभटा विचारकेँ तहिया कातमे रखैत दूटा बातपर विचार करए लगलौं। पहिल गाममे

बहरवैया महंथाइ बनत। गाम तँ हमरो छी, जेते सबहक साझी छै तेते तँ हमरो अछिए। रहल लोकक विचार। से तँ गामे छी जइमे रंग-रंगक लोक अछि, रंग-रंगक जाति अछि, रंग-रंगक मजहब-सम्प्रदायक खेनाइ-पीनाइ, सोच-विचार छै...। तैबीच अपनो विचार रखनाइ अछि। भलेँ दुब्बर-पातर रहने ओ तर पड़ि किए ने तरिया जाए मुदा तँए अपन कर्तव्यक निमरजन नइ करी, ईहो केहेन हएत? अनका जे तीत-मीठ, नोनगर-अनोन लगौ मुदा विचारणीय प्रश्न तँ अछिए। विचारणीय ई जे गाम समाजक छी आकि समाजक गाम छी?

ने गामक आड़ि-धुरक ठेकान छै आ ने समाजक आड़ि-धुरक। साएमे जहिना निनाबेकेँ लोक शत-प्रतिशत बुझि लइए तहिना तँ वैदिक आ अवैदिक समाजमे जँ एकोटा वैदिक रहत तँ की ओ समाजक नहि भेल आकि समाजसँ बाहर भेल सेहो केना कहल जाए?

अपन पैछला तुरक तीनू संगी- महंथ गौरीदास, पार्वती दास आ जानकी दास पर नजैर पड़ल। ओ तँ गाममे नइ छैथ, मुदा हम तँ छी, बाल-कालक सम्बन्ध तीनूक संग शिक्षो आ समाजोक रहल, जँ समय रहैत ओ सभ जनतबसँ बाहर रहैथ तँ केकर दोख लागत?

गाममे कहियौ कि सीमापर कहियौ आकि मोरचापर, अखन तँ हमहीं छी। तँए हुनका सभकेँ जानकारी देब पहिल काज अपन भेल। मुदा लगले मनमे उठल- कियो जगरनाथमे हेता तँ कियो बैजनाथमे तँ कियो केतौ, तखन केना समैपर पहुँच सकै छैथ। मुदा सीमापर एनौं बिना तँ किछु सम्भव नहियेँ अछि। तहूमे तेहेन-तेहेन महंथ सभ छैथ जे डरे कियो औता की नइ औता। असगर मोबाइलसँ जे कानमे कहबो करबैन, मुदा तेहेन-तेहेन चालि-ढालिक छैथ उन्टे वएह पछाइत इन्टरनेटपर अपन प्रतिक्रिया देबे करता जे गामक लोक मौगा अछि।

फेर मनमे उठल जे जँ ऐ दुआरे जानकारी नइ देबैन सेहो केहेन हएत? झूठा बनि जीबैत होथि आकि सच्चा बनि मुदा छिआ तँ समाजेक। जँ हुनकोमे सामाजिकता होनि?

मुदा बीचमे समैयो तँ नहियेँ अछि, तखन? तखन की लगले कोनो उनटन भऽ जेतइ। नीक हएत जे कोनो गौंआँ-समाजक बीच मोबाइलसँ हुनको तीनूकेँ जानकारी दिऐन। मन ठमैक गेल। नीचाँक नजैर ऊपर उठल तँ आगूमे पत्नीकेँ ठकुआएल ठाढ़ देखलयैन। गामक ऊधव-बाधव छी, पतिक की विचार छैन से तँ वएह ने बजता, ऐ ताकमे पत्नी ताकि रहल छेली। मुदा गाममे एहेन आयोजन भऽ रहल अछि आ अखैन तक कोनो भनक नइ लगल अछि। मुदा पत्नियोँक बीच तँ एहेन दायित्व बनिते अछि जे अपन पैरुखसँ पतिकेँ बिसवासमे रखिऐन जे पुरुखपना हमरोमे अछि, तखने ने ओहो अपन शक्तिक भक्तिसँ संगे-संग चलती। तँए मनमे गुन-धुनी उठैत रहए जे केना हिनकर जिज्ञासा रूपी भूखकेँ शान्त करबैन। मुदा एहनो तँ नहियेँ जे बड़ भुखाएल रही तँ आँकरे-पाथर खा ली।

किछु फुरबे ने करए। एक दिस आगूमे पत्नी, माथ चाटैले ठाढ़ तँ दोसर दिस अपने कोनो बाटे ने सुझैए, सुझबो केना करत, लगले पहिने वएह कहलैन तखन बुझलौं, मुदा लगले एहेन प्रश्नक उत्तरो देब कठिन तँ ऐछे...।

संजोग नीक रहल। ओना गामोमे चुलचुली आबि गेल रहए। जेरक-जेर धियो-पुता आ चेतनो-सियान टेन्ट-समेना देखऽ जेबो करैत आ घुमि-घुमि एबो करैत। सभकेँ अपन-अपन मेड़िया, अपन-अपन मेड़क संग हबो-गब करैत आ एबो-जेबो करैत। संजोग नीक ई रहल जे तहीकाल राधारमणकेँ रस्ता धेने जाइत देखलौं।

राधारमण धुरफन्दा लोक। दसठाम बैसै-उठैबला। ओना उमेरक हिसाबसँ पौरुकें भोँटर भेल जे अपन जवानीक प्रदर्शन सीना

तानि कऽ करिते अछि। विचारो नीक छै जे कोनो तरहक मंच किए ने हौउ, जैठाम ओ श्रोता बनि सुनत, तैठाम अपनो विचार रखैक अधिकार-ले उठि कऽ ठाढ़ होइते अछि। नइ मंच तँ मंचक निच्चोँमे अपन विचार रखिते अछि। तँए बिसबासू राधारमण अछिए। सोर पाड़ि कहलिऐ-

"तोरो लीला अजीव छह राधारमण, ने शिवकेँ शिवानी बनबैत देरी लगै छह आ ने महंथाइयक गाम बनबैमे।"

लगमे अबिते राधारमणक चेहरासँ बुझि पड़ल जे केतौ घन्टा-दू-घन्टा बकि आएल अछि। मुदा वको तँ वक छी, बगुला-वक छी आकि डकहर-वक? मुदा से नइ राधारमणक अपन विचार छी। बाजल-

"भाय साहैब, की कहब! गामक जे लीला देखै छी ते होइए जे गामेसँ पड़ा जाइ मुदा बाप-दादाक घराड़ियो छोड़ि केतए जाएब, फेर मिथिला सन जगह थोड़े भेटत।"

राधारमणक विचार सुनि भेल जे पत्नीकेँ ऐठाम रहब उचित नहि। पत्नीकेँ कहलयैन-

"अँगना-घरक काज देखियौ, राधारमण केतौ पड़ाएल जाइए। सभ बात बुझि अहूँकेँ निचेनमे कहि देब।"

पत्नी आँगन चलि गेली। राधारमण बाजल-

"भाय साहैब, देखै छिऐ ने गाममे दू-आना लोक पंथ बुझि वैष्णव धर्म धारण करै छैथ, मुदा की देखै छिऐ जे जँ गोटे साल रौदी भेल तँ अमैया भनडारा पुरैले साए-पचास नवका बबाजी नहि बनि जाइए।"

राधारमणक बात सुनि बुझि पड़ल जे जेना ओकर मन रसगुल्लाक बोरमे डुमल हुअए। भाय! रसगुल्लो खाइ-काल जँ मुहसँ

हँसी नइ फुटलह तँ ओ रसगुल्लाकेँ बेपाइने करब भेल किने? मुस्की भरैत पुछलिऐ- “ई तँ भेल रौदीक बात, मुदा दाही सेहो अछिए।”

आगू एकटा बात आरो बाजए चाहै छेलौं कि बिच्चेमे राधारमण लोकैत बाजल-

“भाय साहैब, जहिना अमैया भनडारामे बबाजीक उजैहिया चढ़ैए तहिना भदवारिमे मछखौकक उजैहिया सेहो चढ़िए जाइए!”

राधारमणकेँ अपन विचारक धारमे बहैत देखि मनमे उठल जे जँ एकरा बिनु खेबनिहारक नाउ जकाँ छोड़ि देब तँ ओ केतए भँसिया कऽ चलि जाएत तेकर ठेकान नइ, तँए छातीमे गुण लगबैत रहब नीक हएत...।

कहलिऐ-

“बौआ, कनी तूँ चुप रहह, पत्नीकेँ उत्कण्ठा बेसी छैन तँए हुनको सोर पाड़ि लइ छिऐन।”

कहि पत्नीकेँ हाक देलिऐन। अपनो मन मानि गेल जे जहिना ओ अनके मुहेँ सुनलैन तहिना तेकर उत्तर सेहो अनके मुहेँ भेटब नीक हएत। राधारमणो मानि गेल। ओकर मानैक कारण अपन रहै, ओकर रहै जे जँ पति-पत्नीक बीच विचारक साम्य रहत तँ काजक साम्य सेहो हेबे करत, आ जखने काजमे साम्यता औत तखने जिनगीमे साम्यता एबे करत। तँए परिवारक बेकतीकेँ नहि परिवारक समूहकेँ परिवारकेँ बुझऽ पड़त। जे अवसर राधारमणकेँ भेट गेल। बाजल-

“भौजी अहींक चर्च भऽ रहल अछि, पाछू भैयाकेँ नहि लथारबैन, तँए अपन बात सुनि लिअ।”

राधारमणक बात सुनि अपनो मनमे भेल जे राधारमण की कोनो बाँटल अछि, तहूमे समाजक बीचक काज छी, किए केकरोसँ

छिपौल जेतइ। राधारमणक बात सुनि पत्नी सुनिया गेली, सोहेमे घर बाहरब छोड़ि बाढ़ैन नेनहि पहुँचली। लगमे अबिते बजलौं-

“राधारमण, सुनै छी जे बाबन मण्डलीक भनडारा काल्हि गाममे हएत?”

जहिना कोटमे नालिश डायर केलाक पछाइत नालिशकर्ताक मन हल्लुक होइ छै, जे से अपन भार हल्लुक होइत सुतऽ चाहैए तहिना पत्नी बजली- “अखन अधखड़ुआ घर बाहरल अछि तँए जाइ छी।”

पत्नी चलि गेली मुदा राधारमणक बहैत मनक धार जेना भदवारि पाबि आरो उधिया गेल। अपनो मने-मन खुशी होइत रही जे पत्नीक सोझहेमे हुनकर बात तेहल्लाक कानपर देलिऐ, मनो हल्लुक भइये गेल रहए। राधारमणकेँ आरो भँसिया सुनैले अपनाकेँ तैयार केलौं। राधारमण बाजल- “भाय साहैब, बड़-बड़ लीला अछि ऐ मन-रंगमे।”

आगूक बात सुनैले जेना मन उताहुल भऽ गेल तहिना टोकारा भरैत कहलिऐ-

“से की, से की बौआ?”

जेना केते चोट राधारमणक छातीमे लगल होइ, तहिना बड़बड़ाएल-

“भाय साहैब, केते मुहेँ सुनलौं हेन जे काल्हि नमहर भनडारा गाममे हएत। केते महंथ शिक्षाक भार उठेता, तँ केते रोजगारक, केते रोग-वियाधिक भार उठेता आ केते खेल-कूदक! गौंआँक सेहो सहयोग नीक जकाँ अछि!”

बजैत-बजैत जेना राधारमणक कण्ठ भरभरा गेलइ। भरभरा ई गेलै जे जखन सभ किछु महंथाइयेमे चलि जाएत तँ समाज

महंथाइक भऽ जाएत आकि समाज अपन सामाजिक रूपमे ठाढ़ हएत? जँ महंथाइयो एक रंगाह रहैत तँ ओ कनी ऐसँ नीक रहैत। मुदा सेहो नहियेँ अछि, कियो ईर घाट तँ कियो वीर घाट तँ कियो बेंग घाट बनौने अछि! राधारमणकेँ गम्भीर होइत देखि पुछलिऐ-

“सुनै छी नवका बबाजी सभकेँ भोजनक संग विदाइयो भेटत?”

राधारमण बाजल-

“भोजनसँ पहिने पाँच हजार नगद आ शीरक-तोशकक संग वस्त्र-जात सेहो देल जेतैन पछाइत भोजन करा विदा करतैन।”

राधारमणक उमड़ल छीतीमे जेना अपनो छाती उमड़ैत जा कऽ मीलि गेल। कहलिऐ-

“बौआ, अपना दुनू गोरे की करब?”

राधारमण बाजल-

“जेतए जे हौउ तेतए से हौउ, अपना ओतए वएह हौउ जे मनक सोहंत हौउ।”

कहलिऐ-

“सएह?”

राधारमण बाजल-

“कोउ काहू मगन तँ कोउ काहू मगन।”



शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015

गठुलाक गारि

सुति-उठि आँखि मीड़िते कोठरीसँ निकललौं कि बाड़ी दिससँ अबैत दादी चारि लग्गा फरिक्केसँ कहलैन-

"तूँ कहियो पुरुख नइ हेमेँ।"

गरियाएल-भरियाएल आँखि मीड़ हल्लुक बनि गेल छल। दादीक कटाह बात सुनि नजैर खिड़ेलौं तँ बुझि पड़ल जे दादी तुरुछल छैथ, मुदा अपन मन खूब हल्लुक रहए, भोरुका नीन खूब गढ़गर सेहो भेल रहए। गढ़गर नीन होइक कारण छल अन्तिम जेठुआ बरखा। जेहने जरल माटि, तेहने झमझमौआ बरखा रातिमे बरिसल। जइसँ ताप-नमी क बीच तेहेन लट्टा-पट्टी भेल जे ऊपरके माटिक सतहक सुगन्धटा नहि, सतहमे सजल धरतीक अनेक सतह-धरिक सुगन्ध पसैर गाढ़ चम्पा जकाँ महमहाइत रहए। ओहन महमहीमे भोरुका समय भेटने गढ़गर नीन हेबे करत किने, सहए भेल रहए।

दादीक बात सुनि मनमे भेल- जे दादी परिवार-ले अखन धरि समरपित भेल आबि रहल छैथ ओ बेजाए बात-विचार किए करती। मुदा ईहो हुअए जे दादीक कड़ुआएल बातमे कहीं अपनो बात ने कड़ुआ जाए, तइसँ नीक ने जे भरमे-सरमे अपन जे अखुनका नित्यकर्म अछि तइमे लगि जाइ। जाबे चाह बनत ताबे दादीसँ कनी हटले रहब आ जखन देखब जे दादी चाह पीब रहली अछि, तखन पाछूसँ आबि पैछला खोंचार सुनि चाहो पीब लेब। तँए आगू बढ़ि

गेलौं।

मुदा दादियो तँ दादीए छैथ, मनक तामस झाड़ि अपन मन हल्लुक करैत गाइयक थैरमे गोबर उठबऽ लगली। दादीसँ मुँह घुमबैत अपन काज हाँइ-हाँइ ससारऽ लगलौं। जइसँ चाह पीबै बेर तक अपनाकेँ खोंचार सुनैले तैयार बना लइक अछि।

मुँह घुमा आगू तँ बढ़ि गेलौं मुदा मन पाछू उनैट-उनैट ताकऽ लगल। कनिक्के पहिने ने दादी उठल छेली, तैबीच कि कोनो अमेरिका-इंग्लैण्डसँ पएरे घुमि आएल हेती, बेसी-सँ-बेसी बाड़ी-झाड़ी घुमि आएल हेती। किए ने दतमैनक घुस्सा दैत दस डेग टहैल दादीक दुनियाँ देखि ली। अइले समय बना टहलैक कोन प्रयोजन अछि। सएह केलौं।

चारि डेग आगू बढ़िते गोरहा मचान देखि सहैम गेलौं। तीन मासक ओरियाएल सम्पैत जे साल भरिक कुसमैयक अंग छी, ओ छिजानैत भऽ गेल अछि। मेघो बदरीहनक रूप पकैड़ रहल अछि जइसँ रौदमे कटौती हेबे करत, तैपर गोरहाक जाँक जहिना ऊपर बौदै-बौदै भेल अछि तहिना निच्चाँ गोबर-गोबर सेहो भइये गेल अछि।

मन मानि गेल जे काजक चूक भेल अछि। किए ने अपन चूकक चुकती उठा ली। मनमे एहेन उठबे ने कएल जे साल भरिक जिनगी रूपी मशीनक ईंधन छी- गोरहा। मात्र एतबे बुझि पेलौं जे भैरसक चारि गोरहाक दिनक हिसाबसँ चौदह-पनरह साए गोरहाक दाम भेल पान-सात हजार, हजार-दू-हजार आरो बढ़त। किए ने कहिऐन जे दादी दस हजार जुरमाना अखने अदा करै छी, गलती भेल। तइले ऐ उमेरमे तामस नइ बढ़ाउ, ब्लडपेसर आ डायविटीजक मौसम बनि गेल अछि...।

मनमे ईहो होइत रहए जे जखने खटाइ-मिठाइक जोग हएत कि अनेरे दादीक मन समगममे पहुँच जेतैन। जखने समगममे पहुँचतैन तखने ओ दादीए भेली आ हम पोते भेलिऐन। किए कोनो अनोन-विसनोन हुनका मनमे रहतैन आकि हमरे कोनो तीताइन-कसाइन रहत।

मनकेँ बुधि नीक जकाँ नीप-पोति लेलक। मनक निपाइ-पोताइ होइते विचारोक नीपिया-पोतिया भऽ गेल। आँखि उठा देखलौं तँ बुझि पड़ल जे पाँच मिनटमे दादी लग पहुँच जाइक अछि। जखने दादीक हाथमे चाहक गिलास औतैन आकि अनेरे ने मन कुकुएतैन। जखने कुकुएतैन तखने चाह पीबैले शोर पाड़ती। भऽ गेल, टटका तामस टटके मेटा जेतैन।

हाथमे चाहक गिलास अबिते दादी नजैर उठा हमरा दिस तकलैन तँ बुझि गेली, अबैले तैयार अछि मुदा पएर ठमैक रहल छै।

दादीक मनमे जे उठल होनि, मुदा ओ शोर पाड़ैसँ पहिने घोंट भरि चाह खींच मुहेँमे चिड़ै जकाँ ऐ सोचमे रखने रहली जे गेल्ह जहिना माइक भरल लोल देखि चुनचुनाइत लगमे अबैए, तहिना हम पहुँचै छिऐन की नहि। दादीक विचार रहैन अदहा जेठमे गठुला-घरकेँ छारि बना लेब, जइसँ साल भरिक जारैनक ओरियान भऽ गेने एकटा नमहर काज, आवश्यक काज भऽ जाएत जइसँ जिनगी थोड़े हल्लुक बनियेँ जाएत। मुदा अपना मनमे भेल जे जानि कऽ अपराध तँ नइ भेल अछि। परिवारक भीतर बेकतीगत जिनगीक आवश्यकता आ समाजक आवश्यकताक बीच तेना सटि गेल छी, जे अपनो आ समाजोक बीचसँ परिवार हटि गेल अछि। परिवारक आवश्यकतापर सँ हाथ-पएर ससैर गेने बुधि-विचार सेहो ससैर गेल अछि। जइसँ गठुला घर छाड़ै-बनबैक काज पछुआ गेल।

एक तँ ओहुना अपन तेहेन गल्ती नइ बुझि पड़ल तैपर जखन गल्तियो मानैले आ जुरमानो भरैले तैयारे छी, तखन किए डेग ठमकत। मनमे साहस आएल। साहस अबिते दादी लग बैस चाह पीबैले विदा भेलौं।

दादियो जेना ताकेमे रहैथ तहिना डेग उठैबते देखि बजली-

"बौआ, एमहर आबह। चाहो पीबह आ बातो-विचार करह।"

कनीकाल चुप भऽ फेर बजली-

"जखन गोरहा भीजिये गेल तखन आब कोन उपाए करब? गोरहा सुखैक समय आब थोड़े रहल, जँ समय नीक करबो करत तँ छोट-मोट काज थोड़े छी जे सम्हारि लेब। डेढ़-पोने दू हजार गोरहा अछि, सरकारी कारोबार नइ ने छी जे अरूणाचलसँ लऽ कऽ केरल धरिक लोककेँ भीड़ा देब। परिवारक काज छी, तोहूमे पुरुख दशा तोहीं भेलह, माए भरि दिन अँगने-घरक काज सम्हारैमे लगल रहै छथुन, बँचलौं खाली हम...।"

कहि दादी चुप भऽ गेली। आँखि उठा दादीपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे हुमरैत मन उमैड़ रहल छैन। जइसँ बर्खाक सम्भवना बनियेँ रहल अछि।

ओना बरखा बरिसैक सोलहन्नी बिसवास नहियेँ कएल जा सकैए मुदा मौसम तँ मुस्की दाइए रहल अछि। प्रभात बेलक स्वच्छ चमक, जे कखनो वादलसँ छनि-छनि चमैक रहल अछि तँ कखनो घेर तोड़ि अपन रूप-लावण्यक चमकी पसाइर रहल अछि। तैसंग मन्द-मन्द पुर्बाक लहकी सेहो सातो परत धरतीक महमहीकेँ आसमानमे पसाइर रहल अछि, तैपर सँ रौतुका बरखा नम-गम बनौनहि अछि।

दादीक उमड़ैत नजैरमे अपन नजैरकेँ सहटारि सटबैत बजलौं-

“दादी, साले-साल गामक एते सम्पैतक छिजानैत भऽ जाइए जइसँ साल भरिक ओहन समस्याक निदान समाजक भऽ सकैए जइसँ समाजक दुखक एकटा सीढ़ी टुटि सहीट भऽ जाएत। अपनेटा छति भेल अछि तेतबे ऐ बरखासँ नइ ने भेल!”

ओना अपन दोख टारैत बाजल रही, मुदा गीध जकाँ सात जोजन देखैवाली दादी तँ बुझिए गेली- जँ अही समस्यामे ओझरा जिनगीक बाटमे अवरोध ठाढ़ कऽ लेब, तखन तँ भूतक संग भविसोक नोकसान हएत!

एते बात दादीक मनमे अबिते जेना छत्तामे मधु संचयक दशापर नजैर चलि गेलैन तहिना बजली-

“बौआ, जिनगीक तीत-मीठक अनुभव जेते हमरा अछि, तेते तोरा नइ ने भेलह हेन, तँए तोरा अखन बच्चे बुझै छिअ।”

अकाससँ झहड़ैत पानिक बून जहिना धरती-अकासक बीच सुरूजक किरिण पाबि सतरंगी रंगमे रंगि चमकऽ लगैए, तहिना भेल।

मनमे उठल-

पहिने हुँहकारी तखन ने सुसकारी। जँ पहिने सुसकारी देबैन तखन भऽ सकैए जे फेर ने कहीं बगैद जाथि। तँए बजलौं-

“दादी, सरलो भुन्नेटा केँ किए कहबै, टुटलो हथिसार तँ नअ घरक सांगह।”

हमर बात जेना दादीकेँ दलदलाइत छातीमे गोड़ा रोपलक। गोड़ा रोपिते जहिना कोनो गाछ कलशऽ लगैत तहिना दादियोक मन कलशलैन। बजली-

“बौआ, मौधकेँ लोक अमृत बुझैए, वस्तुत: छीहो। मुदा

जहिना मनुक्खो आ आनो पशु-ले अमृत छी तहिना...।”

‘तहिना’ कहि दादी मुँह बन्न कऽ लेली। ओना हुनका मुँहमे ऐगला बात सेहो जीह तरमे झाँपल रहैन, मुदा अपन जीहक सुआदकेँ जेना ओ हमरा सुआदसँ मिलबऽ लगली...। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे महान वैज्ञानिक वस्तु हौउ आकि पौराणिक-आध्यात्मिक, अमरूखो आदमीकेँ सुनैक क्रममे जँ मनमे बैस जाइ छै, तँ कि ओइ धारमे ओ दू-चारि डेग हेलि किछु अपन विचार नइ रखैए? रखिते अछि। भलेँ ओ सुनटा हौउ कि उनटा, करोटिया हौउ चाहे चीतपटाह मुदा किछु-ने-किछु तँ मुहसँ निकैलते छै। तहिना मुहसँ निकलल-

“दादी, किछु छी तँ अहाँ दादीए छी आ रहबो करब, मुदा तँए हम अहाँक पोता नइ भेलौं, से अहाँ कटने हएत।”

जहिना मन भरने कोनो वस्तुक सुआदमे बिनु मिरचाइयो देने मिरचाइक सुआद आ बिनु नोन देनौं नूनक सुआद मनमे अबऽ लगै छै, तहिना दादीयोक मनमे एलैन। भरल पेटक आ भरल मनक जेहेन चुहचुही होइ छै तेहने दादीयोक मुँहक चुहचुही बुझि पड़ल। बाल-बोध जहिना सिरिस जनक मुँह देखि मुस्की भरऽ लगैए तहिना भरलौं। मुस्कुड़ाइत देखि दादी, फुलाएल धारक पानि जकाँ ऊपर-नीचा सहीट होइत बजली-

“बौआ, अपन बात चाह पीबकऽ करब, पहिने मौधक बात कहै छिअ। जहिना मौध अमृत छी, तहिना माछीक जनम-भूमि सेहो छी। अखैन काजक बेर अछि। चाहो पीबिये लेलह। अपन बात, अपन बाते नइ अपन-अपन विचारो अपनामे अनहक।”

दादी की कहलैन से बुझबे ने केलौं, जेना पियास लगल रहितो नोनछराह पानि आगूमे आबि गेल हुअए तहिना भेल। जइसँ मुँहक

रूपे विधुआ गेल। विधुआएल मुँह देखि दादी बुझि गेली जे भैरसक नइ बुझलक।

पाशा पलैट मुँहक भाव-भूमि बदलैत बजली-

“बौआ, मोन पारहक जे जइ दिन गोरहा मचान बनबऽ गेलह तइ दिन केहेन योजना बनौने रहह।”

पाछू उनैट तकलौं तँ बुझि पड़ल जे दादी सरिपौं सोलहन्नी सत्ते बात मोन पाड़ि देलैन। बजलौं-

“दादी, अपना जनैत करैक चूक भऽ गेल। काजक व्यस्तता ओइ काज दिससँ मन घीचि लेलक तँए...।”

नजैर दौगा दादी मने-मन हियासली तँ बुझि पड़लैन जे महेशो झूठ नइ बाजल। देखिते छिऐ जे भरि दिन घोड़ा जकाँ दौगैत रहैए, ने खाइक ठेकान छै आ ने पीबैक, भरि मुँह गपो करब से जखन ओ निचेन होइए तखन अपने काजमे बाझल रहै छी, आ जखन अपने निचेन होइ छी तखन ओ बोनाएल रहैए...।

जखन घर-परिवारक विचार-विमर्श घरक सभ जन बैस नहि करब तखन ओ घर केना चलत। बजली-

“बौआ, जखन बाल-बोध बच्चे विद्यालयमे रहैए तखन ओहो मनमे रोपऽ चाहैए जे हम डॉक्टर बनब, इन्जीनियर बनब, प्रोफेसर बनब, साहित्यकार बनब, वैज्ञानिक बनब।”

दादीक सहगर बात सुनि हुँहकारी भरलौं-

“दादी, एकरा के काटत।”

अपनाकेँ अखण्डित होइत दादी बजली-

“बौआ, सृजन-पालन आ संहार बेकती-परिवार आ समाज धरिक बीच चलैत रहैए। तँए जइ उपयोगी काजक विचार करी,

ओइमे जेतबे-तेतबे हाथो लगाइए दिऐ। से नइ केलह। काजकेँ गरभेमे रखि नाश कऽ देलहक।”

मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ, से तँ भेल।”

दादी बजली-

“गोरहा घर नइ बनौने, गोरहा सन ईंधन-सम्पैत गोबर बनि गेल। गोरहा घर सम्पैतकेँ गारि देलक!”

आगू मुहेँ मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ से तँ ठीके गारि देलक।”

अपन तामसक जड़ि मथियबैत दादी बजली-

“गोरहेटा केँ नै बौआ, हमरा जिनगीकेँ सेहो गारि देलक।”



शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015

कनी हमरो सुनू

धुरिया अखाढ़। अदरा नक्षत्र रहितो बर्खाक कोन बात जे झीसियो-झासीक दरस नहि, आ ने मेघमे केतौ मेघेक दरस अछि। ओना बुझि पड़ैए जहिना उनैस साए सरसैठ-अरसैठ इस्वीक अखाढ़कैँ रंग चढ़ि गेल रहै तहिना अहूबेर अछि। मुदा ओहन तँ नहियेँ अछि।

सरसठि-अरसठिक जे अखाढ़ रहै ओ ओहन रहै जइमे पानि पड़ा कऽ पताल चलि गेल, जइसँ तीन साल बरखे ने भेल! तहिना माघक जाड़ जिद्द धऽ कऽ जे रहबो कएल तँ ओकरो कोनो दशा बाँकी नहियेँ रहलै। माने ई जे सिरक-सलगी अलगनीए आ ऊनी कपड़ा सभ बक्शे-बुक्सी धेने रहि गेल।

ऐबेरक धुरिया अखाढ़ हथियामे जे पानि पीलक ओ अखैन तक पियासले अछि। एकर माने ईहो नइ जेना पौरुकाँ चैतो बरिसल, बैशाखो बरिसल, जेठो बरिसल आ सप्ताह भरिक रौद भेने रस्ता-पेरामे धुरा सेहो उड़ऽ लगल।

वृद्धा पेंशनक फारम भरऽ ब्लौकपर जाएब। गामसँ डेढ़े कोसपर ब्लौक रहने गाड़ी-सवारीक खगतो नहियेँ अछि तँए पएरे जाएब। अहाँ कहब जे कोनो समान कीनऽ जे लोक गामोक दोकान जाइए तैयो साइकिलपर चढ़ि कऽ जाइए आ अहाँ एक तँ ब्लौक जाएब जैठाम हाकिम-हुक्काम रहै छैथ, तैसंग गमैया रस्ता टपि धुराएल बगए-बानि लऽ कऽ केना जाएब। आ दोसर डेढ़ कोस पाँचो

किलोमीटरसँ बेसीए भेल तेतौ जे पएरे आएब-जाएब तखन गाड़ी-सवारीक खगते की रहल।

मुदा एहेन शुरूहेसँ अभ्यास रहल। जखन मध्यमामे पढ़ैत रही, गामसँ अढ़ाइ कोस विद्यालय रहए, तखन पएरे सभ दिन आबी-जाय, आ...। एक तँ ओहुना देखै छी जे आमक जे आँठी होइए, शुरूमे कोइली रहैए, कोइलियोमे खिच्चा कोइली, चिड़ैक गेल्ह जकाँ, जे जुआइत-सकताइत मजगूत आँठी बनि जाइए।

तहिना विद्यार्थी जीवनमे जे पएरे चलैक अभ्यास बनल ओ अखनो अछिए। ऐसँ मनो खुशी रहैए जे अपने हाथे-पएरे अपन काज चला लइ छी। ओना, जहिना भगवान सभकेँ करैले हाथ, सोचै-विचारैले बुधि, खाइ-पीबै आ बजै-भुकैले मुँह दइ छथिन तहिना तँ चलैयोले पएर देनइ छैथ।

ब्लौकक काज सबेर-सकाल भऽ गेल, माने दस-सवा दस बजे काज भऽ गेल। बजारक कोनो दोसर काज रहए नइ तँए साढ़े दसे बजे करीब ब्लौकक हाता छोड़ि घरमुहाँ भऽ पौने बारह बजे घरपर आपस आबि गेल रही।

ओना जेबेकाल नहा नेने रही मुदा रौदो आ रस्तोक झमारसँ मनो तबैध गेल आ पियासो लगिये गेल रहए। रौदाएलमे पानि पीब नीक नहि तँए पानिक तरासकेँ दाबि देलौं। खाइयो बेर भइये गेल, मुदा तबधलमे अन्नो रूचिगर नहियेँ जकाँ लगै छै, तहूमे पियासक जोर अछि, जँ कहीं पानियेँ बेसी पिया गेल तखन तँ अन्नक रूचि आरो मरि जाएत। तँए विचार केलौं जे पहिने नहा ली। कोनो कि माघ मास छी, गरमी मास छी। एकबेरक कोन बात जे तीनो बेर नहाएब अधला नहियेँ हएत। संगे देह भीजने पानियोँक तरास कमबे करत। जेते पानिक तरास कमत तेते अन्नक तरास बढ़त। तँए नहा

लेलौं।

नहा कऽ दरबज्जापर अबिते रही आकि अँगनाक ओसारपर पीढ़ियाक आवाज सुनलौं। नीक संजोग देखि मनमे खुशी भेल। खुशियो केना ने होइत, संजोगे ने कर्मो जोग, ज्ञानो जोग आ भक्तियो जोग छी। नीक कर्मक नीक फल आ अधला कर्मक अधला फल सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, आगूओ होइत रहत।

दरबज्जाक ढाठपर भीजल कपड़ा पसाइर सोझे ओसारक पीढ़ीपर पहुँच गेलौं। पहुँचते पत्नी परोसल थारी आगूमे रखि, कनी कात दबि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। थारीकेँ निच्चाँ-ऊपर हियासि देखलौं तँ बुझि पड़ल जे जहिना झोराएल तीमन केराक तहिना तड़ुओ केरेक छी!

कनी नजैर घुसकेलौं तँ केरेक लटपट तरकारियो आ सन्नो केरेक देखलौं। फेर कनी नजैर दौगेलौं तँ लसुन देल केरे-खोंइचाक चटनियोँ बुझि पड़ल।

नीचाँ-ऊपर केराक विन्यास देखि मन झुझुआ गेल। एक तँ जेठोसँ बेसी जुआएल गर्म समय चलि रहल अछि। काँच केराक गुण अछि जे पेटक बान्ह करैए। एक तँ ओहिना समैयक चपेटमे देहक अन्नो-पानि सुखा जाइए तैपर आरो सुखबैक भोजन तँ प्राण भक्षके भऽ सकैए।

आँखि उठा पत्नी दिस बढ़ेलौं तँ बुझि पड़ल जे एकटा आँखिपर साड़ीक छोर पसारने कनडेरीए आँखिये अपन प्रशंसो सुनैक खियालसँ आ बाहरसँ कमा कऽ आएल रही सेहो खुशनामा सुनैले मुस्कुराइत देखि रहली अछि। जखन कि अपने तामसे जरल रही आ ओ चौअनियाँ मुस्की दऽ रहल छेली। मुस्कियो केना ने दितैथ, आने दिन जकाँ पाँच तरहक विन्याससँ सजल थारी जे

पतिक सोझमे रखि खाइत देखती! आखिर पत्नीक सौभाग्य तँ...।

ओना दुनू परानीक बीच विचारोमे कमी-बेसी रहने खटपट-लटपट होइते रहैए। मनमे उठैत रहए- गरमक समयमे केराक विन्यास! मुदा पत्नी पाकल केरा आ काँच केराक गुणक भेदे ने बुझैत। यएह सभ सोचै-विचारैमे कनी हाथ वगा गेल। कनडेरिये आँखिये देखैत पत्नी पुछि देली-

“हाथ किए बगने छी?”

विचित्र स्थितिमे फँसि गेलौं। पत्नी अपने ताले बेताल रहैथ जे जहिया कोनो तीमन-तरकारी नहियोँ रहल तहियो मिरचाइयोक पाँच तरहक विन्यास- फोड़नाएल मिरचाइ, तड़ल मिरचाइ, निमकी मिरचाइ, काँच मिरचाइ आ नोन मिलौल काँच मिरचाइ- बना थारी साँठि अपन पाँचो विन्यासक संकल्प पुरैबते रहलौं अछि। जखन विधेमे कोनो विधान नइ रहत तखन पतिक सोझ मुँह निच्चोँ उतारब तँ उचित नहियेँ भेल।

ओना हमर कड़ुआएल मन देखि पत्नियोँकेँ मन जेना कड़ुएलैन। की कड़ुएलैन से तँ ओ जानैथ मुदा चेहरासँ बुझि पड़ल जे ओ मने-मन धिक्कारि रहल छैथ-

“ईह! दू साए रुपैआ महिना वृद्धा पेंशन-ले जे रेठान केने आएल छैथ! होइ छैन जे बड़का पहाड़ ढाहि कऽ आएल छी। तीन साए रुपैआ महिना चाहक खर्च छैन आ दू साए भेट गेने सभ दिन बुढ़ाड़ीमे मुरगी अण्डा आ दूध पीता। करनी अपाहिजक आ भरनी कमासुतक!”

विचारणीय बात अछि, जे जँ हमरा हाथे काज नइ हएत, माने हमर हाथक काजे हेरा जाएत, तखन उत्पादन केना हएत। आ जखन उत्पादने ने हएत तखन समाज आगू ससरत केना। खाली

बाजब ‘भाषण’ भेल मुदा काजक संग बाजब ने ‘बाजब’ भेल।

अही गुन-धुनमे थारीपर बैसल हाथ वागने रही, तही बीच थारीमे परसल केराक तड़ुआ टोकलक-

“हमर वलिदानकेँ अहाँ बुझि नइ पाबि रहल छी, तँए हाथ वागने छी।”

पुछलिऐ-

“अहाँक की वलिदान?”

जेना केरोकेँ बुझि पड़लै जे एतेटा जिनगीमे कहियो कियो एहेन बात नइ पुछने छल। जखन पुछलक तँ हमहूँ किए ने अपन छाती खोलि उघारि कहिऐ। बाजल-

“हमर दिन अदिन भऽ गेल! नइ ते हमहीं जइ गाछ सभकेँ ठाढ़ केलौं सएह बेइज्जत कऽ रहल अछि।”

मनमे उठल- मनुक्खकेँ इज्जत-आवरूक ठेकाने ने छै आ तीमन-तरकारी एहेन बात किए बजैए? पुछलिऐ-

“की गाछ सभकेँ ठाढ़ केलहक आ की बेइज्जत कऽ रहलह अछि?”

फनैक कऽ झोराएल केरा बाजल-

“तोहीं कहह जे फल रहैत तरकारी बनल छी, से उचित भेल?”

जेते विचारकेँ सोझरबऽ चाहै छी, तेते रंग-बिरंगक ओझरीए लगि जाइए। तखन? मनकेँ थीर करैत कहलिऐ-

“जखन तूँ थारीमे आबि गेल छह, दुनियाँ छुटि रहल छह तखन पहिने तोरे बात सुनि लेब, पछाइत खाएब।”

हमर बात सुनि थारीएमे गल-गुल हुअ लगल। निच्चासँ

झोराएल केरा कहै- पहिने हम अपन दुखनामा बाजब, तँ तड़ुआ कहै- हम ऊपरमे छी, पहिने अपन दुखनामा हम बाजब। मुदा लगले लटपट केरा कहै- हमहूँ तँ ऊपरेमे छी तखन पहिने हम किए ने बाजब।

तहिना कातसँ पीसाएल चटनी कहै- हमरासँ मेहीं के छेँ जे पहिने बजमेँ, तँए पहिने हम बजबौ। तँ बगलमे बैसल सन्ना कहै- जहिना छोट दाना भेने मरूआ कुअन भेल अछि, तहिना तोहर कोनो मद्दी नहि। देह-हाथ मोटगर-डटगर अछि हम्मर आ बजमेँ तूँ। तोरासँ पहिने हम बाजब।

दुनू हाथ उठा 'शान्त-शान्त' कहैत-कहैत सभ शान्त भेल। पुछलिऐ-

"सभ ते कोनो ने कोनो रूपेँ केरे भेलह किने?"

जेना कोनो झगड़ाक पछाइत आकि किछु बजला उत्तर कनी टिफीन करैक मन होइए तहिना सभ केरोकेँ भेल। सभ सबहक मुँह ताकऽ लगल जे के की बजैए। जखन सभ एके छी तखन जँ फुटा कऽ कोइ अपना-ले बाजत तखन ने कहबै- तूँ स्वार्थी छेँ, लोभी छेँ जे सबहक बात नहि बाजि, अपन बात फुटा कऽ बजै छेँ।

मुहेँ तका-तकीमे सभ चुप भऽ गेल। अपनो भूखो लगल रहए आ पियासो रहबे करए, ओना पियास तँ तरसाइत तरसा गेल रहए मुदा थारीमे पड़ल वलिवेदीकेँ रोकलो तँ नहियेँ जा सकैए। ओ तँ कण्ठे लग अँटैक कऽ गरगट मचा देत। जखन केरा दिससँ कोनो प्रश्न नहि उठल तखन कहलिऐ-

"देखह भाय, तूँ सभ एकमुहरी भऽ अपन विचार राखह।"

मुहसँ प्रश्न खसिते बीचमे एकटा टभकल-

"पहिने ई कहू जे देवस्थानमे चढ़ैबला परसाद थारीक कँचका

सन्ना बनल छी, से उचित भेल?”

उचित की भेल, अनुचित की भेल ई तँ पछाइत बूझल जाएत मुदा एना भेल किए? ऐ प्रश्नमे ओझराएले रही कि आरो प्रश्न मनमे उठि गेल- जेतए मालदह आकि पाकल बम्बै आम आगूक थारीमे रहत तेतए पाकल केराकेँ के पूछत?

मुदा आमोकेँ बलउमकी तँ नहियेँ छै। वेचाराक मास-डेढ़ मासक औरुदामे धार जकाँ उजैहिया चढ़ल छै, फेर सालो भरि हेराएल रहत। मुदा केराकेँ तँ से नै अछि। बारहो मासक औरुदा छै..!

किछु फुरबे ने करए जे की जवाब दिऐ। मुदा ओकरा सबहक जे मुँहक रोहैण देखलिऐ तइसँ बुझि पड़ल जे हाथ वागने देखि जनु ओकरो सभकेँ खौंझ उठि गेलइ, तँए एना बजैए। कहलिऐ-

“भाय, तोँ सभ ते अपने बरहबट्टू भऽ गेल छह, ठौर-ठेकान छहे ने जे कोन मास बच्चा जनमाबी जे माघक जाड़ खेप सकए, सालो भरि कच्चे-बच्चे वृद्धि करैत रहै छह, जइसँ भरण-पोषणमे कोताही हेबे करतह। अखैन हमहूँ भुखाएल छी, तोरा सभसँ समय लइ छिअ, खेला-पीला पछाइत निचेनसँ गप करब।”

मुदा से सभ मानि गेल। पत्नीकेँ कहलयैन-

“तीमनक रस आ चटनी रहऽ दियौ बाँकी सभ चीज थारीसँ हटा लिअ। दालि जकाँ झोर आ तरकारी जकाँ चटनी तँ भइये गेल।”

पत्नीक मनमे यकायक जेना कोनो झटका लगलैन तहिना झटैक बजली-

“की करितौं, बाड़ीमे जुआएल केरा देखलिऐ, आमक मास एकरा के पुछैत। अपने आम खाएब आकि केरा, तहूमे छोट-छीन घौरौ नहियेँ छल तँए ओकरे काटि कऽ आनि तीमन-तरकारी, तरूआ-चटनी सभ किछु बनेलौं।”

बजैत-बजैत पत्नीक मन चनकऽ लगलैन। चनकबो केना ने करितैन। एक दिस पतिव्रत धर्मक हनन होइत देखैथ तँ दोसर दिस भूखल पतिकेँ थारीपरसँ उठैत...। केतए गेल दिन भरिक श्रम, जखन कोनो ओकर उपयोगे नहि!

मुदा एना भेल किए से बुझिए ने पाबि रहल छेली। बुझबो केना करितैथ। अपनो तँ कहियो मौसमक अनुकूल केराक उपयोग नहियेँ कहने छेलिऐन..?

..कहबो केना करितिऐन, कोनो कि बुझल छेलए जे एना हएत। एना भऽ आमो कहाँ कहियो फड़ल देखलिऐ। जेना 1962 इस्वीमे फड़ल छल तहिना फड़ि गेल। ओना अखैन तक जे थारीमे हाथ वागि तीमन-तरकारीसँ गप करै छेलौं से पत्नी नइ सुनली। नइ सुनैक कारण छेलैन जे मन घुरिया गेल छेलैन जे भैरसक गिरगिट-तिरगिट ने तीमनमे पड़ि गेल छैन, आकि मकड़े-तकड़ा ने तड़ुआ संगे तड़ा गेल। मुदा किम्हरो ते एके भाग ने भेल हएत, या तँ तीमनमे गिरगिट पड़ल हएत या तड़ुआमे मकड़ा, तइले बाँकी विन्यासक की दोख भेल जे हाथ बगने छैथ?

भूखल-पियासल मनुक्खकेँ देखि केकर मन नइ चहकतै, तहूमे जे परिवारक कर्ता-धर्ता छी।

आँखिपर सँ साड़ीक कोर सरका पत्नी ओइ अपराधी जकाँ याचना करए लगली जे निर्दोष अछि। बजली-

“हमरासँ की कसूर भेल?”

यकायक जेना घरक सीकपर सँ कोनो वौस खसने छहोंछित भऽ छिड़िया जाइए तहिना मन छिड़िया गेल। बजलौं-

“सचार लागल थारी आगूमे अछि, अहाँक चूक केतौ ने अछि। अहीं की करितौं, केराकेँ जँ काटि तरकारी बना नइ खा लेब तँ

ओकर जिनगी गलिये-पचिये ने जाएत।”

जेना हमर बात सुनि पत्नी साँस छोड़लैन। अपना बुझि पड़ल जे किताबक एक पराग्राफ भैरसक पढ़ि लेली तँए किछु विचार छुलकैन अछि। आस्तेसँ सहटैत कनी आगू बढ़ि लगमे आबि अपन सुखाएल धारक रूप साजि आँखि मिरमिरेली।

बुझि पड़ल जे मोती झहैर रहल छैन। ओ मोती नोरक छिऐन आकि मतिक से तँ ओ जानैथ, मुदा अपना बुझि पड़ल जे किछु बुझैक, सुनैक आ जनैक जिज्ञासा मनमे उठि रहल छैन।

हिया कऽ चारू दिस देखलौं तँ मौसम अनुकूल बुझि पड़ल। अनुकूल ई जे एहेन गर्म समय- जइमे पतालोक पानि थस लऽ लइए, तखन साढ़े तीन हाथक मनुक्खक हीरकेँ सोंखब तँ अनुकूले अछि, तैठाम ब्लॉटिंग पेपर जकाँ काँच केराक विन्यास तँ अनेरे पथसँ कुपथ भेल!

किछु फुरबे ने करए। एके वस्तु एकठाम पथक काज करैए तँ दोसरठाम कुपथ भऽ जाइए।

पत्नीकेँ कहलयैन-

“ओना अखन जँ थारीमे देखाइयो-देखाइयो गुण-अवगुण कहब, से अहाँ थोड़े देखबै। तँए अखैन जे मन मानैए खाए दिअ। खेला-पीला पछाइत ओछाइनपर दुनू गोरे बतिया लेब।”

मुदा तैयो पत्नीक मन झुझुआइते रहलैन। झुझुआइत ई रहलैन जे एते हरानसँ जइ पति-ले सेवा-श्रम केलौं, तैयो जखन हुनका पइठ नइ भेलैन तखन हमर धरम की भेल? पत्नीक मनक चढ़ा-ऊतरी देखि कहलयैन-

“अहाँ अनेरे आइन-पीड़ा मनमे अनै छी, जेते थारीमे आन दिन भात साँठि कऽ अनै छेलौं, तेते ते अननहि छी किने, से जखन

हम सठाइये लेब तखन भूखल केना रहलौं, तइले अनेरे मन अनोन-विसनोन केने छी।”

जेना अखाढ़मे रंग-रंगक बीआ-बाइल नैहरसँ सासुरक आबा-जाही शुरू करैए तहिना पत्नियोँक मनमे विचारक आबा-जाही शुरू भऽ गेलैन। बजली-

“अखन जे मन मानैए से खा लिअ। मुदा खेला पछाइत बिसरब नइ, बुझा देब। अखन अहाँ संग हमहूँ सभ विन्यास वागि लेब, सएह ने?”

हँसैत बजलौं-

“हँ तँ सहए ने ते और की।”



शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015

गामक बान्ह

करीब नअ बजे भिनसरमे झंझारपुर बजारसँ एलौं कि पत्नी कहलैन-

“बुधियार कक्काक माए मरि गेलखिन।”

ओना ओही रस्ते, माने हुनके घर लग होइत आएल रही तँ कन्ना-रोहट नइ सुनने रही, जँ सुनने रहितौं तँ अनेरे रूकि कऽ जिगेसा कऽ नेने रहितिऐन। मुदा से सुनबे ने केलौं।

तँए पत्नीक बातपर कनी-मनी बिसवास भेबो कएल आ कनी-मनी नहियोँ भेल। ओना गामक गोटि-पँगरा जनिजातियो आ बच्चो कैँ बुधियार कक्काक आँगन जाइतो आ निकैलतो देखने रही, मुदा एनाइ-गेनाइक माने मरनीए नइ होइ छै, आनो-आनो माने होइते छै, तँए किए बिसवास होइतए जे बुधियार कक्काक माइये मरि गेलैन।

रस्ता-पेरा, आनसँ भेँट भेला पछाइत कुशल-छेम तँ होइए मुदा से तँ होइए जिनगीक आन-आन काजक लेल, ‘के मरल’, ‘के नइ मरल’, से थोड़े होइए। तँए लोकक आवा-जाहीसँ किए पुछितिऐ।

जलखै नइ केने रही, तँए जलखैयक तिसना लगिये गेल रहए। मुदा सोझमे तेहेन बात पत्नीक मुहसँ खसल जे अग-दिगमे पड़ि गेलौं जे पहिने जलखै करी आकि देखऽ जाइ। फेर भेल जे पहिने जलखैए कऽ ली।

जलखै-खेनाइसँ पहिने मनमे उठल जे आन काज तँ छी नहि

जे खा-पीब, पान-सुपारी चिबबैत जिगेसा करब। मृत्यु छी!

मुदा लगले मनमे आएल- भाय मृत्युकेँ तँ लोक चोराइओ कऽ किछुकाल रखैए। किए ने हमहूँ मनमे चोरा कऽ रखि ली आ जलखै केलाक पछाइत पत्नीकेँ कहिऐन जे दादीकेँ देखने अबै छी।

ओना हमर बात पत्नीकेँ नीक नइ लगलैन। किएक तँ ओहो गामक आने स्त्रीगण जकाँ खोटिकर्मा सेहो छथिए। मृत्युक नाओं सुनला पछाइत ओइ दिन संलग्न परिवारक लोक लेल अन्न तँ अन्न रहैए नइ जे मुँहमे लेत, ओ एकादशीक अन्न जकाँ अन्न नहि पील रहैए! मुदा गल्तियोकेँ नपैक की कोनो एकेटा तराजू अछि, केतौ डोमाउ तराजूसँ काज चलैए, तँ केतौ टीन-चदराक पलड़ासँ। केतौ आँखिक तराजूसँ काज चलैए, तँ केतौ राटन-कमानीदार तुलासँ।

जखने रंग-रंगक तराजू रहत तखने रंग-रंगक तौलो हएत आ रंग-रंगक ओजनो हएत किने। देखिते छी जे गाममे कोनो उत्पात होइए, तँ तील ताड़पर चढ़ि जाइए आ ताड़ भार तर सठियाइत चलि जाइए। फेर मनमे भेल जे जँ दादी मरिये गेल हेती तँ किए ने तैयारे भऽ कऽ जाएब आ सभ वृतान्त निमाहनहि आएब। कनी देरीए-सँ ने पहुँचब, कहबैन जे काका कनी नून-तेल आनऽ झंझारपुर चलि गेल छेलौं, तँए अबैमे थोड़े देरी भऽ गेल। नइ जँ कहीं अपने रस्ता दिस तकने हेता आ टपैत देखने हेता तैयो तँ बुझिए गेल हेता। नइ जँ मृत्युक नाओं सुनि रूकैत नहि देखलैन तँ ओहो तँ अँगनासँ चिक्कैर नहियेँ बाजल छला। मुदा दुनियाँक देवता ने कम खाधुर छैथ, घरक देवता तँ बेसी छथिए। बुधियार काकाकेँ कहबैन तँ मानि जेता मुदा पत्नी थोड़े मानती?

तत्खनात मनमे उठल, जखैन दुइये गोरेक बीचक बात अछि, तेसर तँ ने सुनलक आ ने कहबे करबै, तखन तँ भेल विचारकेँ

मानब। से तँ खेला पछाइतो मानल जा सकैए तइले भुखले लहालोट हएब नीक नहि। मुदा से अपने विचारे थोड़े हएत? खाइले पीढ़ियापर बैसब अपन काज भेल, मुदा चिनवारपर सँ आनि कऽ तँ वएह ने देती। जँ कहीं ऑफिस जकाँ 'पेन डाउन हड़ताल' भेल तखन की अपने चिनवारपर पहुँच जाएब? भुखलमे तमसा कऽ पहुँचियो जाएब मुदा पुरुखसँ मौगी बनैमे तँ...। तखन?

हँ तखन एकटा उपाए अछि। गाइक बच्चा जकाँ, वौसैत देह परहक माछी-मच्छर भगैबते ओ विचार सुनैले तैयार भइये जेती। अपन भार कटैत बजलौं- "हम ने झंझारपुर गेल छेलौं, कोनो कि घर-दुआर उठा कऽ लऽ गेल छेलौं, अहाँ देखि एलिऐन की नहि?"

चोर-मोट पकड़ाइते पत्नी सहमली। मनमे उठल अनेरे दोसर गप चालब अनुचित हएत। कहलयैन-

"घरसँ जलखै नेने आउ, खेबो करब आ बुझा कऽ कहबो करब।"

हमर बात पत्नीकेँ जेना मधनोनसँ मीठनोन जकाँ लगलैन। बजली-

"पुरुखक काजक कोनो ठेकान अछि, कखन आएब केतए जाएब। जँ केतौले घरसँ निकली ते नइ भात-रोटी तँ एक लोटा पानियोँ जरूर पीब निकली।"

गाए-गौड़ुक मिलान तँ ठेहुनो पानि दुहान। पत्नीक चपचपी देखि कहलयैन-

"गप-सप्प की केतौ पड़ाएल जाइए, नइ अखन गर लागत ते साँझोमे सुनाइए देब। मुदा पहिने भरि पेट जलखै करा दिअ।"

अपना मनमे भेल जे- शवोत्सर्ग साधारण काज नइ छी, कहुना-कहुना तँ पान-सात घन्टा लगिये जाइए।

जे रोगीक मन भावए से वैद फरमाबए। थारीक साँठसँ बुझि पड़ल जे मनेटा नइ भरि पोखो भोजन हएत। खेनाइओ शुरू केलौं आ गपो-सप्प शुरू केलौं। मनमे जेना खीझ उठि गेल तहिना कहलयैन- “अहाँ देखैले किए ने गेल छेलौं?”

जही टोनमे कहलयैन तही टोनमे टोनियबैत पत्नी बजली-

“कहाँ जा भेल! तेते ने अँगनाक काज पसरल अछि जे साँसो लइक की पलखति होइए।”

सरदर गपसँ तँ बुझि पड़ल जे साँस रोकि जहिना साधक सभ साधना करै छैथ तहिना भैरसक ईहो केली! मुदा ई तँ बजैक चमत्कार भेल। असल चमत्कार तँ काजमे अछि। पुछलयैन-

“अहाँ बुझलिऐ केना जे दादी मरि गेली?”

अपन बातकेँ मजगूतीसँ सत्यापित करैत पत्नी दर्जनो गवाहीक व्यान दर्ज करौलैन। कोटे-कचहरी जकाँ तेते गवाही भऽ गेल जे जाबे सुनवाहि हएत ताबे मुदालहे मरि जाएत। तखन ओइ फैसलाक मोले की?

पुछलयैन-

“अहाँ काजमे लगल रही आ ओ सभ रस्ते-रस्ते बजैत जाइ-अबै छेली जे अहाँ एते गोरे मुँहक बात सुनलौं?”

हम जे पुछऽ चाहै छेलिऐन से ओ बुझिए ने पबै छेली। तथापि धाँइ-दे बजली-

“सुगिया दादी तेना कानि-कानि कहली से छाती दड़कि गेल! ओहिना टक-टक दादी आँखि तकै छैथ, मुहसँ हँसी निकैल रहल छैन, जेना बुझिए ने पड़ैए जे दादी मुइली अछि।”

हाँइ-हाँइ खेबो करी आ गपोमे लाड़ैन-चालैन चलबैत रही।

पुछलयैन-

"एतेखान जे एतेक गोरेसँ गप-सप्प करैमे लगा देलौं, मुदा एक लपकन अपनेसँ जा नइ देखलयैन, सएह ने?"

यकायक जेना मुँह निच्चाँ लटैक गेलैन। बजली किछु ने मुदा बुझि पड़ल जे भीतरे-भीतर गुम्हैर रहली अछि। चुपचाप हाथ-मुँह धोइ कऽ बुधियार काका ऐठाम विदा भेलौं।

रस्तामे आपस होइत ओना केते गोरेकेँ देखिऐ, मुदा किछु पूछब रस्ता रोकबो आ रूकबो हएत। माने जेते समय बुधियार काका ऐठाम जाइमे लागत, रस्तामे रूकने ओते आरो बेसी समय तँ लगबे ने करत। ओना अधिकतर महिलेकेँ आपस होइत देखिऐ। जइसँ किछु पुछब आरो उचित ने बुझि पड़ए। पुरुखसँ तँ ऐगला किरिया-कर्मक विषयमे गप-सप्प करैक प्रयोजनो पड़ैए तँए ई भेल काज निविते काज, तँए एकरा रस्ता-रोकब नइ कहबै। ओना पुरुखक आपसी नहियेँ जकाँ देखमे अबए, तँ सीटियाएल रस्ता बढ़ैत-गेलौं, बढ़ैत गेलौं।

मनमे एकटा खटका उठि गेल। पुरुख हुअए कि महिला ऐगला प्रक्रियाक जे काज अछि ओ पुरुखक भेल, भलेँ महिला यादस्वरूप अबैत होथि। ओना महिलाक डाह-प्रक्रियाकेँ पुरुखक सहयोगोसँ जँ महिल पुरा करैथ तँ ओ बेसी नीक।

अँगना पहुँचते बुधियार काकाकेँ माइयक आगूमे बैसल देखलयैन। प्रेमा काकी जिगेसु सबहक उसार-बैसारमे व्यस्त रहैथ। मिसियो भरि बुधियार कक्काक मुँह मलिन नइ देखलयैन। दादीक मुँह परहक कपड़ा हटल, बाँकी सौंसे देह झाँपल। ओहिना टकटक तकैत, मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे आब बजती तब बजती मुदा बोलता पुरुख तँ मुँह मुनि नेने छेलैन।

दादीक खिलैत मुँह देखि मनमे उठल- जेना पुरान वस्त्रकेँ लोक बदलैए तहिना दादी बुधियार काका सन बेटापर छोड़ि अपने धरती बदैल रहल छैथ...।

गाममे ओहन बेकती बुधियार काका छैथ जे परिवारसँ आगू बढ़ि किछु काजकेँ सामाजिक बुझि, मनमे कहियो ने रखलैन जे सामाजिक काजमे कियो कहत तखन जाएब, आग्रहक पछाइत काजमे हाथ बटाएब। अपन कर्तव्य-कर्म बुझि बिनु केकरो कहने एहेन-एहेन काजमे माने डाह-कर्ममे हाथ बटाएब अपन दायित्व बुझै छैथ। पचीसो परिवारक एहेन काजमे माने मृत्युक पछातिक डाह-कर्मक प्रक्रियामे बुधियार कक्काक संगे हमहूँ रहि चुकल छी। मुदा आइ बुधियार काकाकेँ सिरचढ़ काज छैन, तँ एकोटा पुरुखक लसि नइ देखि रहल छी! एना किए?

ओना दादीक सिरहौनेमे बुधियार काका सेहो बैसल रहैथ आ कनियेँ हटि कऽ हमहूँ बैस दादीक यादिमे आँखि बन्न केने रही। मुदा मनमे यएह घुरियाइत रहए जे अँगनामे बुधियार कक्काक संग दोसराइत हमहींटा छी। अनेको काज अँगनामे उपस्थित अछि। बजारसँ वस्त्र आनब, बाँस काटि चचरी बनाएब, डाहैले लकड़ीक ओरियान करब, इत्यादि-इत्यादि...।

आँखि बन्न, मनमे किछु फुरबे ने करए जे आँखि खोलि बुधियार काकाकेँ पुछयैन- जारैनक ओरियान करए, बँसवाड़िसँ बाँस काटए, बजारसँ कपड़ा कीनए कियो गेल की नइ गेल, की केना काज चलि रहल अछि...।

फेर मन कहलक- केना पुछबैन जे काजक की रूपरेखा अछि, हम हुनकर घरक गारजन तँ छी नइ जे हिसाब पुछबैन। बेसी-सँ-बेसी यएह ने कहबैन जे काका हमहूँ आबि गेलौं, काजमे बेसी देरी नइ

करू।

मुदा लगले मनमे उठि गेल जे काजकेँ की बुधियारे काका देरी केने छैथ जे कहबैन? कोनो गरे ने भेटए जे आँखि खोलि बुधियार काकासँ किछु पुछयैन। हलाँकी बहन्नो रहबे करए; आँखि मुनने रही।

कनियेँकालक पछाइत मनमे उठल- बुधियार काकासँ काजक हिसाब नइ पुछबैन मुदा एते तँ पुछिये सकै छिऐन ने जे सुनील आ सुधीरकेँ आँगनमे नइ देखै छिऐ...।

सुनील-सुधीर दुनू बेटा। ओना बुधियार कक्काक बिसवास जहिना हमरापर छैन, तहिना हमरो हुनकापर अछि। जे से गामक केते गोरे बजबो तँ करिते छैथ जे एकपेटुआ दुनू छी।

ओना एकपेटुआ सहोदर भाए-बहिन होइए, मुदा अपनो बीरान आ बीरानो अपन तँ होइते अछि।

पुछलयैन- “काका, दुनू भाँइ नजैरपर नइ आबि रहल अछि?”

सवुरदानाक फलहार कएल एकादशीक व्रतधारी जहिना टनगरसँ बजैत तहिना बुधियार काका बजला-

“एक भाँइ बजारक काज करए गेल आ दोसर असमसानक काज करए।”

सोझ-साझ जवाब तँ बुधियार काका दऽ देलैन मुदा बिच्चेमे भकचका गेलौं। भकचका ई गेलौं जे असगरे बजार गेल आकि कियो दोसराइतो? तहिना असमसानोक सम्बन्धमे भेल। अछिया खुनब अछि, जारैन काटब अछि, तहूसँ जरूरी पहिने बाँसकेँ काटि-खोंटि, फाड़ि-चीर कऽ चचरी बनबैक अछि, तहूमे चचरियो कि कोनो बाँसेटा सँ बनत। तइले साबेक जौड़ो बाँटए पड़त किने। तहूमे साबे कि पटुआक सोन छी जे लगले हाथपर चढ़ि जाएत, ओकरा तँ पहिने पानिमे भीजैले दिअ पड़ै छै। तहूमे 2008 इस्वीक बाढ़िक

प्रतापे तँ साबेक ओधियो नइ बाँचल। प्लास्टिकक जौड़ी जे भेटबो करत तँ फेर ने कहीं तेसरे बखेड़ा ठाढ़ भऽ जाए। जहिना दरभंगाक अस्पताल बनैकाल जे अफवाह उठल आकि सिमरिया पुलक समय लकड़-सुंगहाक जहिना अफवाह भेल, तहिना ने कहीं भऽ जाए।

मनेमे अग-दिग हुअ लगल। मुदा लगले फेर भेल जे अँगनोमे तँ कम-सँ-कम दू गोरेकेँ जिगेसा केनिहारि स्त्रीगण सभ देखबो तँ करिते हेती। नइ पत्नीक रूपमे तँ अभिभावको रूपमे तँ अपन-अपन पुरुख-पात्रकेँ कहबे करतैन। मुदा लगले मन भिन-भिना गेल, समाजो कि समाज रहल! सभ लोक-लाज उठा सबहक सभ ठकदरूआ बनि गेल। विवेकाभूषणक चर्च बेइमानी छी। एक तँ मृत्युक पछातिक डाह-कर्म पहाड़ सन भारी काज अछि, आ तैठाम जँ लोकक अभाव भऽ जाएत तखन ओ पहाड़ उठत केना? किछु फुरबे ने करए।

मुदा लगले भेल जे जँ दूओटा पुरुख आँगनमे छी, तखनो जँ दादीक भजन-कीर्तन नइ हेतैन, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल...।

कहलयैन-

“बुधियार काका, अहाँ बड़ भागशाली छी, मरितो समय दादी नीक मौसम बना मरली।”

हमर बात जेना बुधियार काकाकेँ नीक लगलैन। बजला-

“किछु छी तँ माए माइये छी किने। किएक वेचारीक मनमे बेटाक प्रति कखनो कलुषता अबितैन।”

मुड़ी डोलबैत हुँहकारी भरैत बजलौं-

“काका, ने माघ मास सन दुरकाल समय आ ने हथियाक सतैहिया झाँट, केहेन सुन्नर चैतक मध्यमास समय अछि, जेहने दिन तेहने राति, सभ काज निचेनसँ हएत।”

मनमे ईहो रहबे करए जे तेहेन नीकसँ खा नेने छी जे पान-सात घन्टा टनाटन देह करैत रहत। तँए मनमे खुशी रहबे करए। मुदा काजक हिसाबसँ लोककेँ नहि देखि मनमे हुअए जे पुछयैन- 'किए ने कियो हुलकियो मारैले आबि रहला अछि!'

बुधियार काका अनकर भागी थोड़े छैथ, जे अनकर बात कहता। जहिना ओ भागी नइ छैथ तहिना ने हमहूँ भेलौं। किए केकरो तीत-मीठ बात बुझिऐ। मुदा लगले जेना मन धिक्कारऽ लगए जे पचीसोसँ ऊपर समाजक परिवारमे दुनू गोरे संगे मृत्युक डाह प्रक्रिया पुरा केने छी, मुदा आइ जखन हिनका सिरचढ़ काज छैन तँ ऐठाम समाजक दोसराइत कियो ने। वाह रे समाज!

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रही कि सुनील दूटा बाँस, बँसवाड़ियेसँ पाङ्गि दुनू कन्हापर कन्हेठने पहुँचल। काज लग जँ अकाज बनि रही, ईहो नीक नहि, मुदा मनमे घुरियाइत रहए जे किछु विचार तँ बुधियार कक्काक हेबे करतैन, से बाजि नहि रहला अछि। मुदा हमहीं किए पुछियौन। अपन देहक कियो मालिक अछि, जे नीक बुझि पड़त, से करब।

मनेमे झिका-तीरी हुअ लगल, एकटा कहए जे कनी गामक गमगमी कक्काक मुहसँ सुनि ली। अखन धरि तँ मानिते एलिऐन जे काका अपना विचारक अपने मालिक छैथ, आ मलिकाना केना चलैत रहतैन तही पाछू दिन-राति तवाह रहै छैथ।

दोसर मन कहए जे जखन गामोक लोक एकपेटुआ बुझिते अछि, तखन किए ने कहबै- 'जे लोरिकक भात खाएत ओ लोरिकक बरियात जाएत। भाय, बरियाती दुनू होइ छै, बिआहोक होइ छै आ मृत्युक एक प्रक्रियामे सेहो होइ छै।

मनमे अबिते बुधियार काकाकेँ पुछौ ने लगलयैन जे काका

कनी काज देखै छिऐ। ओतए-सँ उठि गेलौं। टोने-टोनी चीर-फारि देबइ, जैठाम पहाड़ सन आगूमे काज पसरल अछि तैठाम करैबला गिनतीमे कम पड़ै छी, तखन तँ यएह ने हएत जे कनी बेसी समय लगत। तइले कण्ठ लग तक जलखै काइए आएल छी।

सुनीलकेँ कहलिऐ-

“बौआ, तूँ बाँसक टोन-टान करह आ हम चारि हाथ साबे खड़ैर लइ छी।”

सोबेक नाओं सुनि सुनील बाजल-

“साबे घरमे कहाँ अछि।”

दोहरबैत पुछलिऐ-

“मूजो घरमे नइ छह?”

कहलक-

“नहि।”

अपनो घरमे ने साबे अछि आ ने मूज, तखन तँ भेल समाजसँ माँगब। समाजक मनमे अनोन-विसनोन अछि से देखिते छिऐ। तँए बुधियार काकासँ बिनु पुछने आगू बढ़ि किछु करब अनुचित हएत। ससैर कऽ बुधियार काका लग पहुँच कहलयैन-

“काका, साबे तँ नइए। जौड़ कथीक वाँटब जे चचरी बनत?”

तही बीच सुधीर बजारसँ कपड़ा नेने पहुँच गेल। साइकिलक कैरियरपर मोड़ल-सोड़ल कपड़ा। बीचमे ठाढ़ चारू दिस ताकी तँ बुझि पड़ए जे केना पार लागत। बेसी-सँ-बेसी तँ हम एतबे ने करबैन जे तत्खनात जइ काजक जरूरत अछि से नजैरपर देबैन। तीनू बापूत बुधियार काका तीन घाटपर ठाढ़, एकमुहरी विचार केना हएत? परिवार-समाजक बीच तना-तनी बुझिए पड़ैए।

बुधियार काका लग पहुँच कहलयैन- “काका, अहाँ जेहने अँखिगर छी तेहने पँखिगर सेहो छी, परिवारक काज छी तँए चारू गोरे एकठाम भऽ काजक एकराय बना करब।”

बुधियार काका हमर बात बुझि गेला। बुझिते जेना मन खिललैन। खिलबो केना ने करितैन, जइ परिवारमे दूटा समकश काज केनहार पुरुख आ तैसंग दुनूक समकश नारीकेँ जँ परिवारक मोटा उठा चलैक संकल्प मनमे आबि जानि तँ मोटा कोनो मोटा नइ रहत...। बजला-

“बौआ, बेसी-सँ-बेसी यएह ने हएत जे जेते अनिवार्य काज अछि ओतेकेँ पुरबैत काज पुड़ाएब। मुदा तोहीं कहह जे जइ मृत्यु-प्रक्रियाक जेते काज समाजमे केलिऐ, ओ केतए गेल! अढ़ाइ साङ्गि सभपर अछि। मुदा कियो समाजक दायित्व बुझि करैए आ कियो नइ करैए, तेकरा हम की करबै।”

कहि जेना आगूक विचारकेँ बुधियार काका रोकि लेलैन। मुदा बजैले मुँह लुसफुसाइते रहैन। बिच्चेमे सह दैत कहलयैन-

“से की कोनो चोराएल अछि।”

बुधियार कक्काक मनक चपचपी सौन जकाँ बढ़ऽ लगलैन। दुनू भाँइ- सुनील आ सुधीर अपन-अपन काजमे जी खोलि कऽ लागल। अपने त्रिशंकु जकाँ बीचमे लटैक गेलौं जे ने कोनो काज कऽ रहल छी आने विचार फरिछा रहल अछि।

बुधियार काका जेना मनक बात बुझि गेला। बजला-

“बौआ, दुनियाँमे जेते काज अछि, ओइ संग ओइमे ओकर फलो निहित अछि। मुदा अखन बेसी नइ कहबह।”

आरो मन ओझरा गेल जे चारि गोटे जे चचरी उठाएब सेहो ने छी। सुनील लग जा बाँस टोनियबऽ लगलौं- “बौआ, केना जारैनक

ओरियान करबह, केना असमसान घाट जेबह?”

मुदा जेना तीनू बापूतक एके पेट। पेट ई जे अपन परिवार छी, अपने केलासँ नीक आकि अधला, परिवारक गाड़ी चलैत रहत। रहल बात समाजक, ओ तँ ताबे तक ओहिना ढहैत-ढनमनाइत रहत जाबे बेकती परिवारसँ ऊपर समाजकेँ नहि बुझत।

हुँहकारी भरैत बजलौं-

“हँ से तँ...।”

सह पाबि बुधियार काका बजला-

“मनुक्ख माल-जाल थोड़े छी जे ओकरा बाँस वा लकड़ीक खुट्टामे मोटगर डोरीसँ बान्हि कऽ राखल जाएत। ओ तँ बुधिक मालिक विवेकी छी। अपन कर्मक बन्धन अपने ने बना चलत। से जँ नइ चलत तँ नै चलत। अपन काज छी, नीक कि बेजए पार-घाट लगबे करत किने।”



शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई- 2015

गुड़ा-खुद्दीक रोटी

किरिण फुटलो ने छल कि चौकक चबूतराबला चापाकलपर हल्ला भेल। ओहन हल्ला नइ भेल जेना सात गामक लोक एक्केबेर करैए, मुदा ओहनो नइ भेल जे दू पथियासँ कम होइ।

मोहनपुरवाली अपन पड़ोस गामवाली- माने लालपुरवाली-केँ झटकी मारि कहलकैन-

“ओ बुढ़िया! खाली भभटपन लधने अछि, मरैके मन ने ते उठि-उठि आगि तपै छी।”

पड़ोसिनीक विचारमे हुँहकारी भरैत लालपुरवाली टोकारा भरलैन-

“जेकरा जे घिनाएब लिखल छै ओ कियो बाँटि लेत।”

चबूतराक निच्चाँमे सकुनी दादीक परपोती- सुदामा- दतमैन करैत टहलैत ठाढ़ रहए। पूर्ण जिनगी जीनिहारि अपन एक साए तीन बर्खक सकुनी दादीक खिदहाँस सुनि सुदामा ललैक गेल।

झटैक कऽ चबूतरापर चढ़ि मोहनपुरवालीकेँ गट्टा पकैड़ बाजल-

“अहाँ सभ जे एना केकरो अकची-दोकची जहपटार छीटने फिड़ै छी से पहिने हमरा ई बुझा दिअ जे दादीकेँ जनै केना छिऐन?”

एक तँ मोहनपुरवालीकेँ पड़ोसिनी लालपुरवालीक भर, दोसर एके तरपानमे सात समुद्र सेहो पार करैत रहए। माने एक साए तीन

बर्खक सकुनी दादीपर थाल-कादो फेकैत रहए। जे बात सुदामा बुझि गेल।

परिस्थिति विषम होइत गेल, तेकरे हल्ला भेल। अन्तमे यएह फरिछौट भेल जे सात दिनसँ सकुनी दादी बीमार छैथ, एक्केटा रट लगल छैन जे गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब तखन प्राण छुटत। सएह चरचा गाममे पसैर गेल। जेकरा व्याख्याकार सभ अपना-अपना ढंगे कियो हाथीक नाँगैर छुबि हाथी बुझैए तँ कियो सूढ़ छुबि...। मुदा बात से नइ अछि। बात अछि भरल-पुरल परिवारमे सकुनी दादीक पति पचासे बर्खक अवस्थामे मरि गेलखिन, पचास बर्खसँ ऊपरसँ घरक भार उठौने सकुनी दादी आइ एक साए तीन बर्खक अवस्थामे ओछाइन धेने खाली ओतबे बात बजै छैथ, दोसर कोनो बात नहि बजै छैथ। अन्तो-अन्त सभ चुप होइत गेली।

जखन हल्ला भेल तखन अपनो नीन टुटि गेल रहए, मुदा ओछाइन नइ छोड़ने रही। नइ छोड़ैक कारण छल जे बिनु बुझने केना जाएब। ओना बुझैयोक केते रस्ता अछि। जहिना एक कानब ओहन होइए जे मृत्युक सूचना दइए तँ दोसर हँसैक सूचना सेहो दइते अछि। तहिना ने हल्लोक अछि, केतौ चोर-चोरक हल्ला होइए, तँ केतौ अगिलग्गीक हल्ला, केतौ झगड़ा-झंझटक हल्ला होइए तँ केतौ नाच-तमाशाक। मुदा से हल्लाक अकान नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं तँए अनकासँ पुछब जरूरी भइये गेल।

ओछाइन छोड़ि चौक दिसक रस्ता पकड़लौं। चौको तँ चौके छी। ने गामक ठेकान आ ने चौकक ठेकान। केतौ साहित्यिक चौक, तँ केतौ राजनीतिक, केतौ संगीतक तँ केतौ सिनेमा-सर्कसक, केतौ ताड़ी दोकानक महराइ तँ केतौ दारू दोकानक बुबकी।

लोक चौकपर किए बैसत? जँ नइ बैसब तँ दस गोरेक

विचारक आदान-प्रदान केना हएत, आ जँ से नइ हएत तँ अपन-अपन गाम भेल, जेना मन फुरए तेना राखू।

दरबज्जापर सँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि झबड़ी दीदीकेँ अबैत देखलयैन। मनमे खुशी उपकल, खुशी ई उपकल जे लोको तँ लोके छी, केकरो फुटल लोटा जकाँ पेन फुटल छै तँ केकरो दहीक तौला जकाँ कान ओदरल छै...। मुदा से नइ झबड़ी दीदी गामक बेटी छैथ। दुरागमनक मासे दिनक पछाइत पीसा मरि गेलखिन। तहियेसँ वैधव्य धारण केने पिताक परिवारमे आबि बसली। गामक बेटी झबड़ी दीदी, तँए गामक केकरोसँ अनोन-विसनोन किए हेतैन।

सबहक ऐठाम आएब-जाएब काज-उदेममे अदौड़ी-बरी खोंटब इत्यादि सामाजिक काजसँ जुड़ि समाजी रूपमे रहि रहली अछि। एकटा पैघ गुण ईहो छैन जे जेही नजैरसँ समाजकेँ भाए-बोन बुझै छैथ, तहिना विचारोक मिलानी रखने छैथ जइसँ शत-प्रतिशत बात सत् लग तक पहुँचल रहै छैन । तँए दीदीक भेँटकेँ शुभ मुहूर्त बुझि पुछलयैन-

“दीदी, केम्हर हल्ला भेल छेलइ?”

जेना दीदी ओइ झगड़ाक पनचैतिये केने अबैत होथि तहिना बजैक सुर-सार मुँहपर चमकैत रहैन। होइतो अहिना छै, पञ्च जँ अपन पनचैती लोककेँ जना नइ देलक आ पेटे-पेट रखि लेलक तँ गोल-माल नइ किए हएत। दीदी बजली-

“बौआ, गामक ते तोहीं सभ ने पुरुख-पातर भेलहक, सोल्होअना गलती मोहनपुरवालीक छेलइ, मुदा समाजो तँ समाज छी, एहेन तँ नइ ने जे सामाजिक बन्हने टुटि जाए।”

दीदीक सहगर विचार सुनि आरो बुझैक विचार भेल, विचार ई भेल जे ठाँहि-पठाँहि केकरो दोखी कहि देब आ बात बुझले ने रहत,

तखन तँ अनेरे तेसर बखेड़ा बखारी बनौत। पुछलयैन- “दीदी, कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

जेना एकतोर महराइ गाबि महरैया साँस छोड़ैए आ मरसिया एकटा खतम करैत एके धुनमे दोसर शुरू करैए तहिना झबड़ी दीदी बजली-

“बौआ, तूँ सभ बेटा-भातिज भेलह, तोरा लग नइ बाजब तँ केकरा कहबै।”

दीदी जेना अपन पनचैतीक भारक कान्ह बदलैत होथि तहिना बुझि पड़ल। कान्ह बदलब दुनू होइए। एक कान्हपर सँ दोसर कान्हपर लेब आ दोसरकेँ कान्हपर देब सेहो होइए, से बुझि पड़ल। कहलयैन-

“कनी तखन जैड़ेसँ कहियौ, दीदी?”

झबड़ी दीदी बजली-

“सकुनी दादी ओझाइन पकैड़ लेलैन जे दिन छैथ से छैथ। हुनके-ले लोक सभ रसगुल्ला, लालमोहन, अमीरती सभ लऽ जाइ छैन तँ देखिते कहै छथिन- ‘गुड़ा-खुद्दीक रोटी खाएब।’ तही बातक झगड़ा भेल।”

दीदीक गपसँ बुझि पड़ल जे सभ बातक भाँज नइ लगत। तहूमे जँ पुछि दैथ जे एकर की हेबा चाही, तखन तँ तेहेन गरगट ने गरगोटिया देत जे आरो बेसी पहपैट हएत। तइसँ नीक जे ऐठामसँ आगू ससैर ओतइ चलि जाइ। मनमे ईहो उठल जे भने भोरे-भोर दादीक दर्शनो हएत आ कौल्हुका भोरक भेँटक असीरवाद सेहो माँगि लेब। कहलयैन-

“दीदी, अहूँ अँगना-घरक काज देखियौ आ हमहूँ कनी आगू बढ़ि देखै छिऐ।”

दीदी मानि तँ गेली मुदा मानितो-मानितो बजली- “एहेन होइ जे एकटा नव-नौतारि कनियाँ गामक सीरे चाटए? कियो अपना बौहकेँ सम्हारि किए ने रखैए!”

दीदीकेँ तरङैत देखि निकैले जाएब नीक बुझलौं। विदा होइत कहलयैन-

“घुमि कऽ अबै छी तखन सब गप फरिछा कऽ करब।”

हमर गप झबड़ियो दीदीकेँ नीक लगलैन। बजली-

“ओम्हरसँ एला पछाइत हमरो सब बात कहिहह।”

प्रश्नसँ बुझि पड़ल जे भैरसक दीदीक मन जेना भीतरे-भीतर जरि रहल छैन । कहलयैन-

“चाहक ओरियान कऽ कऽ राखब। अपना गामपर जाइसँ पहिने अहाँक भेँट कऽ लेब।”

सकुनी दादी बीस बर्खक अवस्थामे निरोग कनियाँक रूपमे अपना गाम एली। शरीरेसँ निरोग नहि, लुइर-बुइधसँ सेहो। निरोगक एक अर्थ होइए डॉक्टरी जाँच-परख केलाक पछातिक निरोग आ दोसर होइए रोगसँ लड़ैक उर्जवान निरोग। ऐठाम दोसर तरहक निरोग दादी सभ दिन रहली। गाम अबिते गामक समाज कियो पुतोहु, कियो काकी आ कियो भौजी मानि अपना-अपनीकेँ सभ हथिया लेलकैन।

ओना सकुनी दादीक पिताक परिवार आ ससुरक कहियौ आकि पतिक परिवारमे एक जाति रहितो स्पष्ट दूरी बनल छेलैन, अर्थक नजरिये। मुदा दुनूक दूरी मेटा गेल, जातिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैमे। बेटा-बेटीक बिआह तँ लोक जातियेमे करैए।

श्रमशील परिवारसँ निकैल दादी निम्नवर्गीय किसान परिवारमे

आबि गेली। नैहरमे अपन खेत-पथार नइ रहने सकुनी दादी अनका खेतमे चौदहमे बर्खक अवस्थासँ माता-पिताक संग काज करैत आबि रहल छेली। जइसँ खेती-पथारीक सभ लूरि सीखि नेने छेली। अगहन-पूसक धानक लड़ती-चड़ती- माने धान काटब, तैयार करब, नार-पात समटब इत्यादि- निमाहला पछाइत धानक कुट्टी सेहो अपना ढेकीमे करै छेली, जेकर निर्धारित बोइन तँ भेटते रहैन जे तैसंग गुड़ो-खुद्दी सोल्होअना भेट जाइ छेलैन। ओही महिक्का गुड़ाकेँ खुद्दीक चिक्कसमे मिला रोटी बनबै छेली जे अपनो आ परिवारोक लोक खाइ छेलैन।

सकुनी दादीक सासुरक परिवार निम्न वर्गक किसान परिवार। ओहन परिवार जे रूढ़िवादी सोचसँ जकैड़ अपन बाड़ी-झाड़ीसँ लऽ कऽ चर-चास धरि बटाइ लगा, परश्रमावलंबी बनि चुकल छल। अपन मूल पूजीमे ह्रास हएब सोभाविके छै। मूल पूजीक माने भेल अपन श्रमक संग अपन अर्थो। जँ से नइ तँ ओ मूल पूजीसँ इतर भेल। ओना महाजनो आ बैंकोसँ लोक कर्ज लऽ पूजी निरबैत अछि, मुदा ओ अलग भेल।

सासुर परिवारमे अबिते सकुनी दादीक अपन लूरि चीज देखि मनमे औढ़ मारऽ लगलैन। औढ़ ई जे अपने सभ पुरुख-पात्र बैस गप-सप्पमे दिवस गूदस कऽ रहला अछि मुदा जिनगीक ठेकाने ने छैन। अपने दरबज्जापर पाहुन-परक जकाँ पुरुखकेँ बैसैक आदत आ महिलाकेँ अँगनाक भीतर बान्हि कऽ राखब। अधिकांश काजकेँ निषेध कहि निषेध केने छैथ। आँगनसँ बाड़ी घुमै-देखैक विचार ससुरक सोझ सकुनी दादी रखलैन। विचारेटा नइ रखलैन ईहो कहि देलखिन जे ऐ घरमे हमरो साझी अछि तँए अपना घरकेँ अपना लूरिये-बुधिये चलाएब। पाछू हटैत ससुर निर्णय देलखिन- “जेहने

बास तेहने अगवास, किए ने घुमब-फिरब। कोनो कि अनकर छिऐ अपन छी, अपने नइ देखब तँ आनक आशा केतेकाल।”

तीन बर्ख धरि बाड़ी-चौमास घुमि-फिरि सकुनी दादी देखैत रहली। मने-मन समैनुकूल विचारैत रहली। मन कड़कैत रहलैन, तरसैत रहलैन, दहलैत रहलैन...।

..चौमास सन खेत जइमे फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक धनमण्डल लगबैक शक्ति अछि ओ कुरथी-तेबखा, भाँग-धथूरक बोन-झाड़ बनि घरक अगवास बनल अछि!

तीन बर्खक पछाइत सकुनी दादी आँगनसँ छलांग लगा बाड़ीमे कुदली। अखन धरि जे परिवार अपना हाथे भूमि छेदनकेँ वर्जित केने छल ओइमे झमार पड़ल।

सकुनी दादीकेँ खेतमे पदार्पण भेने परिवारमे भूचाल उठल। भाँग-बथुआ उपजैबला खेत फल-फलहरीसँ भरि गेल। मुदा से विचारोक क्षेत्रमे परिवारमे उठबे कएल। श्रमहीन आ श्रमशीलक परीक्षा आँखिक सोझ हुअ लगल। सकुनी दादीक बगावत परिवारमे आगि पजारि देलक। अन्तो-अन्त ससुर अपन निर्णय सुनबैत सकुनी दादीकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, हम चौथापनमे आबि गेल छी, ऐगला जिनगीक कोनो ठेकान नइ अछि, मुदा तँए अहाँक विचारक कदर नइ करब सेहो नीक नहि, तहूमे अहाँ अपन बाँहि-बलक परिचय दऽ देने छी।”

कहि ससुर चुप भऽ गेलखिन, मुदा सकुनी दादी खरिआरि कऽ पुछलखिन-

“इतिहास बुझू आकि वंश ओ एक क्रम अछि, चलैत रहत, मुदा समैनुकूल विचारो आ काजो तँ बदलबे करत। तइले काज केनिहारो ने चाही।”

सकुनी दादीक विचार सुनि ससुरक मन वौआ गेलैन। मनमे रंग-रंगक विचार उठऽ लगलैन। अपन सबहक सात्विक जिनगीमे जबरदस धक्का लगल। वैचारिक क्षेत्रमे सात्विक्ता बनल रहल मुदा बेवहारिक क्षेत्रमे- माने कर्मक क्षेत्रमे- ओकर ह्रास भेल। जइसँ जिनगीक दूरी बनैत गेल। ओ बनैत-बनैत एते दूर भऽ गेल जे एक दिस सात पर्दाक संग नारीक बास भूमि बनल तँ दोसर दिस विभत्सता बढ़ल। खेत-पथारक बीच किसान-जमीनदारक बीच झीका-झीकी चलैत रहल खेतक उपज-सम्पैत नष्ट होइत रहल, गरीबी बढ़ैत रहल, पेट पोसैले- माने पेटक पोस खातिर लोक-पड़ाइत रहला। अन्तो अन्त निर्णयपर पहुँच ससुर कहलखिन-

"जाबे धिया-पुता बाल-बोध छल सेवा करैत परिवारक गाड़ीकेँ चलबैत रहलौं, मुदा आबक परिवारक गाड़ी तँ अहीं सभपर ने चलत।"

पिताक विचारक प्रभाव बेटोपर आ पुतोहुओपर पड़लैन। दुनूकेँ जिनगीक महान संगी बनैक अवसर भेटलैन।

पचास बर्खक अवस्थामे सकुनी दादीक पति मरि गेलखिन। सासु-ससुर पहिनहि मरि गेल रहैन। पाँच सन्तान- चारि बेटी एक बेटा-क संग सकुनी दादी परिवारक रंगमंचपर आबि गेली। पतिक बेमारीक इलाजमे परिवार खिलैच गेलैन, तैपर पतिक मृत्यु सकुनी दादीक आँखिक सोझ- माने जिनगीक सोझ-मे अमवसियाक अन्हार जकाँ दुनियाँ अन्हार भऽ पसैर गेलैन। एक दिस पतिक मृत्युक पछाइत विधवाक कलंक देखैथ जे देखौआ, चोरौआ दुनू होइए, आ दोसर दिस छअ आदमीक ओहन परिवार अछि जइमे चारि बेटीक बिआह-दानक संग पाँचम अपन बेटाक परिवार ठाढ़ करब अछि।

पाँचो बेटा-बेटीक परिवार बसबैत दादी तेसर पीढ़ीक परिवारमे

पहुँच गेली। अपना संग अपन पुतोहु, पीठपोहू भेलैन। पीठपोहुओ केना ने होनि, जे काज एक नारी कऽ सकैए ओ दोसरो तँ काइए सकैए। तेतबे किए जे समैयक संग बहुत आगूओ कऽ सकैए।

तीन सीढ़ीक निच्चाँ परिवारक जे अचार-विचार रहलैन ओ एकपुरखियाह रहलैन। एकपुरखियाह भेनौं आगू ससैरते रहलैन। ससरबो केना ने करितैन, सभ घरमे ओते काज तँ ऐछे जेते लोक अछि। अपन-अपन खाड़ी बनल काज, सभ अपन-अपन जिनगी ओइमे रमौने रहल...।

आइ चारिम पीढ़ीमे चारिटा पोता सकुनी दादीकेँ छैन, जे तीन भाँइ अपन-अपन परिवारक संग एक भाँइ गौहाटी, दोसर बंगलौर, तेसर दिल्लीमे रहै छैन। एक भाँइ- माने जेठका बेटा- अपन टेक धेने छैन। टेक ई जे चारि पीढ़ीक बीचक परिवार अछि, माए-बाबू, दादी, तैपर सँ सकुनी दादी। वंशक जेठ सन्तान हमहीं छिऐ तँए नइ सेवा केने सभसँ बेसी पाप हमरे लागत। मुदा एकसंग जँ सभ मिलि रहब नीक-अधलामे संगे रहब, तखने ने ओइ पापसँ मुक्ति पाबि सकै छी।

सकुनी दादी ऐठाम पहुँचते देखलौं जे दादी टहैल रहली अछि। मुदा बिनु पएर छूने असीरवादो केना माँगब? तइ बीचक जे रस्ताक दूरी अछि तइमे मुहोँ केना चुप रहत। ई बात बुझल अछि जे दादी सभ दिन जहिना काजमे टनाटन रहली तहिना बोलो टनाटन रहलैन, मुदा आब तँ अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेल छैथ, केना बोलीमे टनटनी औतैन। आ जँ से टनटनी नइ औतैन तँ केना बुझब जे असली चानी छैथ आकि नकली? तँए झटहा फेकैत बजलौं-

“दादी, आबो अहाँकेँ कठीए लाड़ैन नीक लगैए?”

‘कठिया लाड़नि’ केते रंगक होइए, ऐ फरिछबैमे दादीकेँ ओते देरी लगलैन, जाबे हम लगमे पहुँच पएर छुबि नेने छेलिऐन। पएर

छुबि संकल्प करबैत पुछलयैन- “दादी, काल्हियो अहिना गप-सप्प करब किने?”

केना हमर मन दादी तोड़ितैथ तँए जोड़ैत बजली- “हँ-हँ काल्हिये किए परसुओ गप-सप्प करब।”

ओना दादी अँगनेमे घुमैत-फिरैत रहैथ, मुदा हुनक घुमब-फिरब देखि अपने मनमे भेल जे रोगाएल-बुढ़ाएलक तँ थरमे-मीटर छी चलब-फिरब, से किए ने दादियोक बोखार अही थरमा-मीटरसँ नापि ली। चुप देखि दादीकेँ चुपी नीक नइ लगलैन, बजली-

“बौआ गोबर गणेश, आब कखनो-के अपनो मन कहैए जे बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।”

मनमे भेल जे जँ दादियो अपन परिवारक धारी आ अपना जन्मक बर्ख मन रखने हेती तँ अपनो बुझिए पड़ैत हेतैन जे हम केतए छी। मुदा लगले मनमे भेल जे छौड़ा-माड़रि हम सभ छी तखन एते गपक खोंट-खाँट करै छी आ जोजन भरि देखनिहारि ओहिना थोड़े बाजल हेती?

विचारैमे देरी भऽ गेल। दोहरबैत दादी बजली-

“बौआ, किछ बजलह नहि?”

मने-मन किछु निर्णय काइए ने पेने रही। भाय जखन बुझले अछि, जहिना इन्टरभ्यूमे प्रश्नोत्तरी नइ होइए, मात्र प्रश्न-उत्तरक बीचक गतिक दूरीक जाँच होइए तहिना तगेदा सुनि हमहूँ ओही सूदिया जकाँ महाजनक आगू अपनाकेँ उपस्थित करैत कहलयैन-

“दादी, जे बात अहाँ बजै छी, से अपना सन भेल?”

हमर बात सुनिते दादीक मन जेना नीचाँ उतरलैन। बजली-

“से की, बौआ?”

कहलयैन- “दादी, अखन अहाँक एक जिनगी पछुआएले अछि आ कहै छिऐ बड़ बुढ़ भऽ गेलौं?”

चौंकैत दादी बजली-

“से की बौआ?”

दादीक चौंकब देखि मन नाचि उठल। बिजलोका खसैकाल जहिना चमकी अबैए तँ कियो चौंक जाइए आ कियो चौक मारि लइए। मुदा दादीक चौंकब से नइ छी, फेर मन भेल जे जँ चुप रहब तँ चौंकल दादी फेर तगेदा करती। तइसँ नीक जे जहिना ओ बजली तहिना कहिऐन, कहलयैन-

“दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़क आड़ियोपर ने पहुँचलौं हेन आ कहै छी बड़ बुढ़ भऽ गेलौं।”

एकटा पछुएलहा जिनगी दादीकेँ ओइ नोकरिहारा जकाँ धएल भेटलैन जिनका कोनो हेरेलहा-पछुएलहा एरियर एक-ने-एक दिन भेट जाइए। लपकि कऽ दादी बजली-

“बौआ, जखैन बजबे करै छह तँ मुँह झाड़िकऽ किए ने बजै छह, हम कोनो आन छिअह जे तूँ हमर अधला करबह।”

जिनगीक सिनेह दादीक देखि कहलयैन-

“दादी, अखन अहाँ झुनकुट बुढ़ कहाँ भेलौं हेन?”

विस्मित होइत दादी बजली-

“झुनकुट बुढ़ केकरा कहै छै?”

आश भरल दादीक जिनगी देखि आस भरैत कहलयैन-

“दादी, जेना धानक सीस पूर्ण जिनगी पाबि रेहे-रेहे टुटि-टुटि, टूर बनि-बनि धरतीपर खसैए, से तँ अखन पछुआएले अछि।”

दादी बजली- “से तूँ केना बुझै छहक?”

कहलयैन-

“अखनो देखै छी जे बोलीमे टनकी अछिए। चानी छी कि रंगा से बुझैले हाथक औंठामे टनटनी रखनहि छी।”

मनमे भेल जे जँ कहीं दादीक जिनगीक धारमे बोहिया गेलौं तखन तँ अपन काज तरे पड़ि जाएत...।

गाममे झगड़ा बझि गेल अछि...।

मुदा से भेल। ‘हाथक औंठामे रखनहि छी’ सुनि दादी एते मगन भऽ गेली जे बोल्तीए बन्न भऽ गेलैन। गाछी-बिरछी जकाँ सौंसे रस्ते बुझि पड़ल।

कहलयैन-

“दादी, जइ काजे आएल छेलौं से तँ बिसरिये गेल रही।”

चौंकैत दादी बजली-

“बिसरैबला गपकेँ पहिने बाजि लएह, तखन जे बिसैरो जेबह ते बिसैर जइहह।”

कहलयैन-

“दादी, गुड़ा-खुद्दीक रोटी केना बनै छै?”

चारि पीढ़ीक जिनगीक ऊपर ससरैत-छलकैत दादीक नजैर अपन नैहरक बीसम बर्खमे पहुँच गेलैन। बजली-

“बौआ, ओही गुड़ा-खुद्दीक पोस खा सासुर एलौं। मुदा आब ने ओ देवी आ ने ओ कराह रहल। मुदा हीक ओही सीकपर टाँगल अछि।”

दादीक बात सुनि मनमे उठल- आब ते लोक पंजबिया छाँटल अरबा चाउर खाइए तैठाम दादीक गुड़ाक ओरियान केना हेतैन?

मुदा फेर भेल जे गछि लइ छिऐन, दस बीस बर्खे कोटो-

कचहरीक गप फरिआइए, हम तँ सहजे ओइसँ बाहर छी।

कहलयैन-

“अहीले अहाँक हीक लटकल अछि। अखन जाइ छी, जोगाड़ केने आएब।”



शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई- 2015

सीरक गाछ

जेठ मास। भिनसुरका उखड़ाहाक दू घन्टाक काज पुरबैत रही कि सुर्ज दिस तकलौं। दू घन्टाक माने खेतक काजक दू घन्टा, नइ कि दिनक दू घन्टा।

रौदाएल हवा झँटियबैत-झड़कबैत रहए। अन्दाजमे आएल जे एगारह बजि गेल हएत। दू घन्टाक हिसाबसँ काजक समय पुरैत रहए। काज उसारि खुरपी-हँसुआ समेट जखन गमछा तरक मोबाइल उठेलौं कि एगारह बजैमे पाँच मिनट पछुआएल देखलिऐ। काजक समय नष्ट केना करब मुदा उसारल काजकेँ पसारबोमे तँ पाँच मिनट समय लगिये जाएत। अग-दिगमे पड़ि गेलौं।

मनमे उठल- काजोक की कमी छै जे एकटा उसैर गेल तँ दोसर नइए। दुनियाँमे ने खेतक कमी छै आ ने बाड़ीक, ने बाड़ीक कमी छै आ ने फुलवारीक, ने फुलवारीक कमी छै आ ने फलवारीक, तहूमे फलवाड़ियो कि कोनो एके रंगक अछि, तीन-मसुआसँ बरह-बरखा धरि अछि।

की करी की नइ करी, बिच्चेमे त्रिशंकु जकाँ मन लसैक गेल। काजक पतराइत विचार समय दिस देखैक जोर मनमे मारलक। जेठ मास। केहेन जेठ? जेठो तँ जेठ होइत-होइत जहिना जठिया जाइए तहिना ने छोट होइत-होइत छोटियाइत माटि-बालुमे दबैत दबिया जाइए? जेठो कि कोनो एके रंगक होइए, पाछूसँ अबैत गाड़ी सवार जकाँ तेहेन रूप बना रंगमंचपर नचैत आबि रहल अछि, जेकरा

परेखब बाल-बोधक खेल नहि।

पाछूसँ जँ रौदियाएल समय अबैत रहल तँ आरो बेसी रौदिया जाएत, आ जँ से नै कहीं पाछू बढ़ियाएल पानि जेहेन पीने रहल तेहेन हरियाएल रहबे करत किने। मुदा जँ ने बाढ़िक पानि पीने हुअए आ ने रौदियाएल हवा पीने हुअए, तेहनो जेठ तँ होइते अछि। सएह जेठ।

ओना काजक हिसाबसँ जेठ घटियाएल रहए मुदा लम्बाइ-चौड़ाइक हिसाबसँ मिसियो भरि कमी नहि। काजक समय काजक दौड़मे ठेकान-बेठेकान भऽ जाइ छै, मुदा अकाजक समय तँ विरहाएल जकाँ बेर-बेर घड़ीक सुइआ दिस तकबे करैए। सएह भेल।

फेर मोबाइल उठा समय देखलौं तँ दू मिनट बढ़ल, तीन मिनट बाँकी अछि। माने नहाइक बेर अबैमे तीन मिनट बाँकी अछि। आगूक रस्ता बाड़ीक बीचे-बीच अछि, जेतए काज करैत रही तेतए-सँ आगूक बाड़ीमे वामा भाग पाँच गाछ लताम आ दहिना भाग सात गाछ नेबो पड़ैत अछि।

नहेबोक कि कोनो समय अछि, जेकरा जखन गर लगै छै से अपना गरे नहाइक समय बना अपन काज चलबैए। तखन तँ भेल अपन जिनगीक संकल्पित बान्हकेँ निमाहब।

मुदा ओहो तँ कोसिकन्हाक बहुआहा बाध जकाँ मनुक्खो आ समाजोमे तँ अछिए। जेकरामे ने कोनो आड़ि-मेड़ छै आ ने खेतक शकल-सूरत, जेम्हरे मन फुरए तेम्हरे हिया कऽ देखि लिअ आ सोझहे विदा भऽ जाउ। मुदा से थोड़े अछि, तीन बजे भोरसँ नहाइक घाट शुरू होइए आ तीन बजे राति तक चलैत रहैए। बीचमे केतौ आड़ि छै जे बुझब कखन उसरैए आ कखन शुरू होइए?

वामा भाग दिस लतामक गाछ फड़सँ लदल, जेठ रहितो जेहने

हरिअर पात तेहने हरिअर फड़सँ सजल-धजल अछि। तरकारीवारीसँ आगू एक दिस फलक झाड़ी तँ दोसर दिस फलक तरूवारी। दुनू फल जहिना नेबोक झड़झाड़ी तहिना लतामक तरूवारी। दुनू दिस दुनू अपन मस्ती भरल जुआनीसँ लदल।

आगू डेग उठिते दुनू फल- माने झाड़ीक नेबो आ तरूवरक लताम- पर नजैर गेल। एकटा मीठ दोसर खट्टा, एकटा गुदगर दोसर रसगर, तहूमे दुनूक पेटमे बीआ सेहो अछिए। किछु छी तैयो तँ छी दुनू जिनगीक सिरसजमनियेँ।

ने लताम दिस डेग उठए आ ने नेबो दिस। केकरा कहबै जेठुआ जेठ आ केकरा कहबै तहूसँ जेठ। खिस्सा जकाँ नइ ने होइए जे एकटा रहबे करै, एकटा पहिनेसँ रहै आ एकटा तबेसँ रहै आ एकटा सभदिने रहै...।

मुदा से भेल नहि, सीरबला गाछक एकटा लताम अपन पूर्ण जिनगी जीब पूर्ण स्वस्थता पाबि अन्तिम भेँट चढ़ैले अकास तियागि धरतीक कोरामे आबि खसल, जीव-जन्तुक रक्षा लेल अपन वलिवेदीपर पहुँच गेल।

धरतीपर खसल फलक आवाज सुनि हमरो नजैर ओम्हरे बढ़ल। फरिक्केसँ फल देखि मन मोहिया मोहित हुअ लगल। आगू बढ़ि हाथसँ उठा अंत-प्रत्यंग निहारए लगलौं, ने केतौ कोदवाक दाग आ ने केतौ तिलबा। सजल-धजल गुण-सम्पन्न गुदासँ भरल सिनुराएल लताम।

लतामकेँ नीक जकाँ निहारियो ने पेने रही कि झाड़ीमे झड़झड़ाइत एकटा पाकल नेबो सेहो खसल। नेबो खसैसँ पहिने- माने जा नेबो नइ खसल छल- मनमे उठल रहए जे लतामक हाल-चाल, समय-सालक समाचार पुछि लेब। मुदा से भेल नइ, जेना दू

गोरेक बीच अपन लीला देखबैक उपरौंज हुअ लगैए तहिना बुझि पड़ल। जखन नेबोओ अपन वलिदानक लेल वलिवेदीपर आबिए गेल तखन किए ने दुनूकेँ एकेठाम परीक्षा करी।

लतामकेँ हाथमे नेने नेबो लग जाइ आकि हँसुआ-खुरपी-मोबाइल आ गमछाकेँ गाछक जड़िमे रखि नेबोएकेँ उठा आनी? सएह केलौं- गाछ तरसँ नेबोकेँ उठा हाथमे लइते रही कि ओ चहैक गेल। रससँ भरल रूप मुदा चहकलो पछाइत आँखिक नोर अपन ठौर धेने! एको बून नोरक दरस नहि! अही टराटकमे रही कि चहकैत नेबो बाजल-

“दू रुपैआ दामक हम छी, मधुबनीक टीसन-कातक होटलमे दस टुकड़ी कटि दस गोरेक भोजनकेँ सुवादिष्ट करै छी मुदा तैयो लोक हमरा दुसिते रहैए जे तूँ काँटक फड़ छेँ तोहर कोन मोजर!”

एक तँ ओहुना नेबो, दारीम, बेल कँटाएल गाछक फल छी, तहूमे बेल तँ ऊपर उठि झाड़ीसँ निकैल जाइए, जँ अपनामे झाड़ी बनबितो अछि तँ जेना-जेना अकास दिस उठैत गेल तेना-तेना झाड़ीकेँ झड़ियबैत डारिकेँ सुमझबैत आगू बढ़ि बढ़ैत जाइए, मुदा नेबो तँ से नइ छी! ओकरा कँटाएल वंशक कहि बगूरो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। जँ कोनो फल-फूलमे अमृत वरिसबैक शक्ति अछि तँ ओ नेबोओमे अछिए।

गाछक जड़िमे नेबोकेँ खसल रहने, ओरिया कऽ देह समटैत हाथ बढ़ा जड़ि लगसँ नेबो निकालने रही। काँटक झाड़ीक फल हाथमे अबिते मनमे खुशी जगले रहए। मुदा चहकल दू फाँक जकाँ भेल नेबोकेँ देखि मनमे भेल जे जँ फटबो कएल अछि तँ ओकरा ओरिया कऽ उपयोग केलासँ कोनो फरक नहि, किएक तँ ऊपरसँ खोंइचा ने फटलै, रसक बखारी तँ ओहिना समटल छै।

अपन विचारमे विचरण करैत विचारैत रही तँए नेबोक चहकबपर धियान नइ अँटैक ओकर गुणक उपयोगक विचारमे पहुँच गेल। मुदा तँए कि नेबोक तमतमी कमल रहै, मने-मन तमतमाइते रहए। ओना मनमे ईहो बात उठैत रहए जे दू-चारि ठोप रस जँ अमृते रहत तइसँ की लोकक दिन गुदस जेतै? असल अमृत तँ अन-पानि होइए। मुदा किछु बाजी नै चुपे रही, तमतमियोँ तँ तखन तमतमाइ छै जखन ओकरा संग खट-समाद होइ छै।

नेबोकेँ नेने लतामक गाछक छाहरिमे बैस लतामक संग सजबए लगलौं कि बिच्चेमे नेबो टभकि गेल-

“हम आगूमे बैसब, नइ तँ ऐगलाक गप-सप्प सुनैमे समय ससैर नहाइबेर भऽ जाएत आ हमरा बेरमे खेले उसैर जाएत।”

अखन धरि लताम अपन मुँह समेटने सभ किछु देखि-सुनि रहल छल। ओना नेबोक फटफटी सुनि लतामकेँ तामसो उठै मुदा अपन दरबज्जापर देखि बरदास करैत रहए। खाली मंचपर वक्ता जहिना भरि पोख बजै छैथ, आ श्रोता भरि कान सुनै छैथ तहिना एकतर्फा नेबो अपन भाषण-पर-भाषण ठाढ़ करैत रहए। मुँह कखनो सापुट नै लइ, खाली मंच देखि नेबो फेर बाजल-

“भाय साहैब, अमरीत बरसा करैबला फल हम छी, अपन दियादवाद झाड़ीक फड़ कहि हमरा बोकियबैत रहैए आ आन-आन अपनाकेँ तरवर कहि मोजरे ने दइए।”

लतामक नजैरसँ बुझि पड़ल जे तामसे जरल जाइए मुदा बीचमे हमरा देखि अपन मुँह बने केने छल। ओना तरे-तरे ओकर टीक तामसे ठाढ़ भेल जाइत रहै, मुदा लाजक पछे दरबज्जापर किछु ने बजैत रहए। कोनो कि औझुका दरबज्जा छी, सभ दिनसँ एहेन होइत आबि रहल अछि जे कोनो दरबज्जापर अमृत-पान भेटैए तँ

कोनोपर विष-पान। मुदा अमृत-विषक सीमेपर ने नेबो सेहो ठाढ़ अछि।

आँखि उठा लतामपर देलिऐ तँ बुझि पड़ल जे किछु बाजए चाहैए। आँखिक टुसकी देलिऐ। टुसकी पबिते बमछैत नेबोकेँ कहलक-

“तखैनसँ तोरा देखै छियौ जे बड़े फट-फट बजै छेँ जे हमरा मोजरे ने दइए।”

लतामक बातकेँ बिच्चेमे रोकि, जहिना एक सेना दोसर सेनाकेँ अकास-पताल धरिक सभ रस्ताकेँ रोकि बजैए तहिना नेबो बाजल-

“कोन बेजए बात बजलौं जे तोरा एना तामस उठै छह? तोहीं मोजर दइ छह?”

लतामक भक्क जेना खुजि गेल रहै तहिना कनी पाछू हटैत नेबोकेँ कहलक-

“हम तरूवरक फल छी से ते मोजरे ने अछि आ तूँ ते सहजे झाड़ीक फड़ छिएँ।”

‘झाड़ीक फड़’ सुनि नेबोकेँ मने-मन होइ जे मरि जाएब तँ मरि जाएब मुदा एहेन बातकेँ आगू नइ बढ़ऽ देब। बाजल-

“पहिने तूँ अपन अधखड़ुआ बात पुरा करह, पछाइत जँ कोनो बात छुटि जाएत तखन हम बजबह।”

नेबोक मनमे होइ जे गाछक फल रहनौं लताम देखैमे तँ हमरे जकाँ अछि। साइजक हिसाबे एके रंगक छी, मुदा लताम तँ गुदगर होइए, अपने रसगर छी। संगे ओकर बीआ मात्र सृष्टिकर्तेटा नहि, अमृत वरसक सेहो अछि, तैठाम अपने तँ कनाहे छी। तेतबे किए, ओकरा लोक हबैक कऽ चाहैए आ जँ हमरा हबकत तँ से हेतइ! नेबो

सहैम गेल।

नेबोकेँ समहल देखि लताम कहलकै- “भाय नेबो, तोरा कि कोनो हम आन बुझै छिअ जे कानमे झड़ पड़ेबह, कहै छहक जे हमरा मोजरे ने अए। हमरे कोन मोजर अछि। जहिना तोहूँ फूलेसँ फड़ै छह तहिना हमहूँ फूलेसँ ने फड़ै छी, तूँ फड़ भेलह हम फल भेलौं सहए ने। आम जकाँ थोड़े मोजरै छी अपना सभ जे मोजर हेतह।”

बैसल-बैसल दुनूक बकठाँइ सुनि किछु फुरबे ने करए। कनी कम कि कनी बेसी कहै तँ दुनू नीके बात। यएह ने होइ जे खटाएल मुहेँ नेबो कनी बेसी खटगर बजइ।

दुनूकेँ बीच बँचाउ करैत कहलिऐ-

“भाय जेहने लताम भेलह तेहने नेबो भेलह। दुनूक मुहोँ-कान आ रंगो-रूप मिलै छह, तँए ‘आगू बैसब कि पाछू बैसब’ एकरा छोड़ह। दुनू अमृत छिअ, तँए अपन-अपन अमृतत्वक गुणकेँ बुझह।”

मुड़ी डोला नेबो मानि गेल जे खाइकाल सभ अगुआएल बनल रहैए हम पछुआएल बनै छी सएह ने, मुदा पहिल कौरमे तँ हमहूँ साझी रहबे करै छी किने।

सुनि कऽ मानि तँ दुनू लेलक मुदा बजैसँ परहेज करैत मुहेँ बन्न कऽ लेलक। अपन मन रहए जे किए ने दुनू अपन विचारकेँ अपनेमे समेट लिअए। मुदा आगू बढ़ि बजैले कियो तैयारे ने अछि! जखैन कि अखने दुनू रक्का-टोकी करै छल!

फेर मनमे उठल, तामसे ठोर बन्न केने ने मुँह बन्न छै, मुदा मनमे तँ ओहिना तामस पजरले हेतै...। तँए कनी खोंरना चला दिऐ। खोरियबैत बजलौं- “भाय नेबो-लताम, दुनू भैयारी भेलह मुदा

अपन-अपन वंश तँ दुनूक अलग-अलग छह, से पहिने फरिया लाए।”

राम दरबारमे जहिना छोट-छोट बानर किछु सुनि एक-दोसरक मुँह ताकऽ लगै छल तहिना लतामो आ नेबोओ एक-दोसरक मुँह ताकऽ लगल। मुहोँ केना ने तकैत, कोनो कि ओकरा टिपैन माए-बाप देने रहइ। बानर जकाँ करहर उखाड़ि माथपर रखैत गेल, डुमैत गेल, भँसियाइत गेलइ..!

दुनू दुनूक मुँह तकैत मुदा बजैत कियो ने किछु। फेर दोसर खोरनि चलेलौं-

“भाय, घरक चारमे खोंसल टिपैन नइ छह तँ नइ छह, मुदा ई तँ बुझल छह किने जे धरतीपर केना एलौं?”

लतामक चुपी देखि नेबोकेँ तामस उठल, बाजल-

“हम पनियाह छी मुदा तूँ ते थलियाह छह किने, तखन पहिने तूँ ने बजबह। हमरा ते पानियेँमे घोरि कऽ लोक पीब जाएत मगर तोरा जँ पानि सेने कियो पीतह, तेकरा तूँ बिना कफ-ठेँर, सरदी-बोखार उतारने छोड़बहक, बाजह।”

नोवोक बोकिएलो पछाइत जेना लतामकेँ सस नइ ससरइ। हिया कऽ देखै तँ बुझि पड़ै जे बोनो-झाड़क नेबो हमरासँ छोट कहाँ अछि। देखै छिऐ जे कनियेँ ठरिया कऽ गछिया टाभ नेबो तेहेन होइए जे हमरा वंशमे अखैन तक ओहन भेबो ने कएल हेन।

लतामक चुप्पी देखि नेबोकेँ बुझि पड़लै जे भैरसक हमर विचारक असैर लतामोकेँ भेल।

असैर पाबि नेबोक मनमे भेल जे जखने केकरो आइन-पीड़ा, दुख-बेथाक असैर होइ छै तखने ने ओकर मुँह खुलै छै। तँए आब देखिऐ जे लताम की बजैए।

मुदा जेना लतामकेँ किछु फुरबे ने करइ। दुनूमे देखिऐ जे नेबो तँ किछु बजितो अछि मुदा लताम तँ सोलहन्नी गुमकी लाधि देलक। कहलिऐ- “भाय, एना नइ हेतह पहिने ई कहह जे तूँ ऐ धरतीपर केना एलह?”

सातो गाछ नेबो एकठाम बैस अपन परिचय-पात कऽ नेने रहए, तँए सबहक बात सभकेँ बुझल रहइ। सीरक गाछक सिरगर फल दइबला सीरजन फल जहिना लताम तहिना नेबोओ। दुनू अपन बुढ़ाड़ीक रंगमे रमल-रंगल। जिनगीक सभ तीत-मीठक अनुभवी दुनू...।

नेबो बाजल-

“हमर तीन वंश अछि, बीआसँ गाछ होइ छी, डारिमे कलम लगौलासँ होइ छी आ गाछक सीर कटलासँ सेहो होइ छी। हम अही वंशक सीरक गाछ छी।”

नेबोक सुगंध भरल रस पीबिते मन वौआ गेल। मुहसँ खसि पड़ल-

“आमकेँ मोजर होइए, तँए कि तोरा फूलक मोजर नइ भेल, से तँ भेबे कएल, तइले अनेरे ने तामसे फटै छह।”

‘अनेरे तामसे फटै छह’ सुनि आकि की, जहाँ मुँह बन भेल कि नेबो झपाटा मारलक-

“जहिना आम अपनाकेँ मोजर दइए तहिना हमहूँ अपन फूलकेँ मोजर बुझै छी, ककोड़बो बिआन ओकरो छै जे घोदा घोदे फड़ैए आ हमरो तँ से अछिए। तखन जे आम बढ़ि-चढ़ि कऽ बाजत से मानबै।”

अपना ताले-वेताल भेल नेबो। की बजैए नइ बजैए से किछु बुझबे ने करिऐ। एतबे अन्दाज आबए जे रसिया कऽ कसिया गेल

अछि। कहलिऐ- “सुनै जाह, एना जे एकहरफी तामस झाड़ै जेबह से नीक नइ हेतह। तँए फुटा-फुटा कऽ बाजह। तोराले हम किए झूठ बाजी।”

‘झूठ किए बाजी’ सुनि नेबोक मन शान्त भेल। मुदा तैयो मन उझैक गेलै। आम दिस इशारा करैत बाजल-

“भाय साहैब, हम सीर-वंशक छी, ओ बिनु सीरक अछि। बीआसँ कहियौ आकि आँठीसँ से होइए, चाहे कलम लगा कऽ होइए जे दुनू तँ हमरो होइते अछि। मुदा तेसर रंगक जे सीरसँ गाछ होइ छै जे हमरा तँ होइए मुदा आमकेँ से कहाँ होइ छइ?”

नेबोक विचारमे तेना बोहिया गेलौं जे बजा गेल-

“हँ, से तँ होइते अछि।”

शतरंजक सह जकाँ नेबोकेँ सह भेटल। एके-बेर तीन घर टपि बाजल-

“आमकेँ हम बिनु सीरक गाछ बुझै छी, तँए ओ बिनु माथक भेल, जखन माथे ने छै तखन ओ समाजक तीत-मीठ केना बुझत।”

नेबोक सन-सनीसँ बुझि पड़ए जेना भोजनक सभ विन्यासमे सनाएल हुअए! कहलिऐ-

“देखह भाय नेबो, एकटा तोरे फटफटेने तँ नइ ने हएत, लतामोक वंश ने बुझबहक?”

मने-मने लताम सेहो अपन वंश-वृक्ष गुनि नेने रहए। अत्मामे बिसवास बनि बसि गेल रहै जे हमरो वंश तीनपुरिया तँ अछिए। जहिना नेबो बीओसँ, डारियोसँ आ सीरोसँ वंश सिरजैए तहिना तँ हमरो वंश अछि। आमकेँ छै कि नइ छै से ओ अपन बुझत, तइले हमर छाती किए फटत..?

डँटैत नेबोकेँ लताम कहलक- “तोरा ढेरीए छौ तइसँ अनका की, ओ अपन बाँहिक बुते कमा खाइए आकि तोरे ढेरीए जीबैए। तइले तोहर छाती किए चहकै छौ?”

लतामक बात सुनि बुझि पड़ल जे नेबो किछु बजैले लुसफुसा रहल अछि। एकरा सबहक लपौड़ीमे अपन नहाइयोक बेर उनैह रहल अछि। मुदा एकरा सभकेँ छोड़ि नहाइयो-खाइले केना जाएब। दुनू दुनूपर तमसाएल अछि। बीचसँ उठि कऽ चलि जाएब आ जँ कहीं दुनू अपनामे पटका-पटकी करए लगए तखन ते खेनाइयो ने गरगट हएत। तइसँ नीक जे कनी नीक आकि कनी अधला, टटके फरिछौट कऽ दिऐ। टटका फरिछौट बेसी नीक होइतो अछि।

कहलिऐ-

“दुनू भैयारी सुनह, दुनू गोरे शिवलिंग जकाँ बीचमे आड़ि दऽ दहक जे अपन-अपन दुनूक सीमा भेलह आ ओइ सीमाक भीतर अपन दुनियाँ भेलह।”

बिच्चेमे नेबो बाजि उठल-

“हमरा दिससँ कोनो इतराज नइ मुदा लतामोसँ से पुछि लियौ।”

हाथक इशारा दैत नेबोकेँ कहलिऐ-

“भाय नेबो, जखन दुनू गोरेकेँ एक्के आँगनक धरतीपर रहि दिवस गुदस करैक छह तखन अनेरे लड़ैत-झगड़ैत किए रहबह, मेले-मिलानसँ किए ने रहबह।”

नेबोकेँ जेना अपन जिनगीक किछु कटु अनुभव रहै तहिना मनमे धकमकाइत रहइ। ओना धकमकीक दोसरो कारण रहै जे सीमा कातमे- माने जैठामसँ एक दिस नेबोक बगान रहै आ दोसर दिस लतामक, तैठाम आड़िक कातमे लतामक गाछ नेबो गाछकेँ

कोनो कर्म बाँकी नइ रहऽ देने रहइ- से देखल-भोगल रहबे करइ।

नेबोक मनक गम्भीरता आ लतामक चुप्पी देखि मनमे उठल- नहाइयो-खाइक बेर हूसल जा रहल अछि आ कोनो काज ससरिये ने रहल अछि, अनेरे समय उनैह जाएत...।

ओह! अनेरे सभ दम तोड़ै छी। नेबोकेँ कहलिऐ- "नेबो भाय, एना रग्गर केने नइ हेतह, सभकेँ सभपर बिसवास करए पड़तह, तखन ने काल्हि दिन निचेनसँ रहबह।"

नेबोक मनक तामस दोसरे रंगक रहइ। जेना होइ जे जखन सभ जाने मारै आ जिनगीए लइ पाछू लगल अछि तखन किए ने हमहूँ मुहेँपर कहिऐ...।

नेबो बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ पुरुख भेलौं आ हम जड़ि भेलौं। अहाँ हमरा जिनगीसँ प्रेम करै छी तँए हमहूँ जिनगी देने छी। मुदा जहाँ-धरि बिसवास करैक बात अछि तइमे हम मनुक्खेपर नइ बिसवास करै छी।"

नेबोक बात सुनि मनमे भेल जे जाबे एहेन विचार दुनूक नइ रहत ताबे दुनूकेँ दुनूपर सँ अबिसवास नइ हटतै आ जाबे एक-दोसरपर बिसवास नइ जगतै ताबे नेबोक मन असथिर नइ हेतइ। एकरा के नकारि सकैए जे मिथि-मालिनीक सेवा कएल वन-उपवन, झाड़ी-फुलवारीक देश हमर मिथिला छी।

जैठाम एक दिस धारक कटानसँ फल-फलहरीक खेती उपैट रहल अछि आ दोसर दिस तइसँ कनियोँ कम गामसँ उपटनिहारक कमी सेहो नइ छैन..!

सामंजस्य करैत लताम-नेबो दुनूकेँ कहलिऐ- "जे दिन बीत गेल ओ धरतीसँ उड़ि मनाकासमे बसि गेल मुदा काल्हि दिन-ले तँ

सभकेँ अपना-अपनी सोचय पड़तह किने?”

नेबोक मन जेना समटा कऽ गाढ़ रस बनि गेल होइ तहिना बुझि पड़ल। ओना बुझि पड़ल जे खटरसमे मीठरसक प्रवेश भऽ रहल छै। तैसंग ईहो बुझि पड़ल जे जँ मुहसँ किछु खसि पड़ल तँ नेबो जहिना कटाएलपर छनछना कऽ लगैए तहिना फेर ने कहीं लगि जाए। मुदा जाबे नजैर-नजैरक मिलानी नइ हएत ताबे प्रेमसँ काल्हि दिन चलब तँ कठिन ऐछे...। कनडेरीए आँखिसँ नेबोओ दिस ताकी आ लतामो दिस।

नेबोक मन जेना-जेना शान्त होइत जाइत देखिऐ तेना-तेना लतामक मन संताप दिस बढ़ल जाइत देखिऐ। असथिरसँ जखन नजैर उठा लतामपर देलिऐ कि नजैर मीलिते लताम बोम फाड़ि कानए लगल। ठोर बिजका-बिजका तेना ने कानि-कानि अपन बेथा-कथा कहए लगल जे किछु-किछु बुझबो करिऐ आ किछु नहियोँ बुझिऐ।

तैबीच नेबोक मुँह बजैले लुसफुसए लगलै। नेबोकेँ लुसफुसाइत बजैक मुँह देखि मनमे खुशी उपकल। खुशी ई उपकल जे भने प्रति-उत्तरमे लतामो किछु बजबे करत, तहूमे कनैए। जँ हँसैत रहैत तँ पहाड़ो तोड़ैक झगड़ा होइत मुदा कननीमे तँ अपनो जान भौर भेल रहै छै।

नेबो बाजल-

“भाय, जहिना तूँ तहिना तँ हमहूँ छीहे, तखन तूँ कनै किए छह?”

मनमे भेल जे भने एक जिनगी जीनिहार दुनू अछि आ दोसर संगजीवी वा सहजीवी जीनिहार सेहो ऐछे तँए ओकर दोस्ती बेसी गाढ़ हेतइ। तही बीच हुचकैत-हुचकैत लताम बाजल- “देव, दानव,

मानव सब बेपीरित भऽ गेल! रहब केतऽ!”

लतामक बात नेबोकेँ जँचल मुदा उत्तर फुराइते ने रहइ। नीक जकाँ बेथाक कथा बुझबे ने करइ। पाछू हटैत नेबो बाजल-

“भाय, एना नइ बुझबह, जखन तोरे जकाँ हमहूँ छी तखन केतऽ गड़बड़ छह से फरिछा कऽ बाजह?”

लताम बाजल-

“भाय, पहिल आफत तँ ई आएल अछि जे कोसी-कमला धारक बाढ़ि जेमहर जाइए तेमहर खाइए, दोसर बसबैबला अपने बहरवास भेल जा रहल अछि तखन तोहीं कहह जे अदौसँ आएल बाप-दादक वंश केना बँचत?”

बिच्चेमे नेबो बाजल-

“ई सभ ते हमरो भइये रहल अछि तइले तूँ कनै किए छह? जँ औरुदा लऽ कऽ आएल हएब तँ केकरो मेटेने मेटेबै।”

लताम बाजल-

“भाय, तूँ ऊपरे- घारे मुँह तकै छह, तइसँ नइ ने काज चलतह।”

‘ऊपरे-घारे’ सुनि नेबोक मन कनी पिनपिनेबो कएल मुदा लगले भेलै जे जखन परिवारोमे रंग-रंगक समस्या अबै छै, तैठाम तँ हम दोसर समाजक भेलौं, भऽ सकैए जे ओकर बात नइ बुझल हुअए। बाजल-

“भाय, कनी फरिछा कऽ बाजह। नजैर ओमहर नइ जाइए।”

लताम बाजल-

“जहिना मिथिलांचलक फल लताम छी सेव नहि! मुदा?”

लतामक प्रश्न सुनि मन ठमैक गेल। नजैर उठा जखन नेबो

दिस देलौं तँ बुझि पड़ल जे भैरसक ओहो अपन जिनगीक रागमे विराग भऽ रहल अछि।

नेबो दिससँ नजैर उठा जखन लतामपर देलिऐ तखन बुझि पड़ल जे लतामक धौना जेना टुटि गेल होइ तहिना मुँहक बिजकी देखै छी। मुदा एहनो तँ दुनियाँमे ऐछे जे लोक अपन शीलक गुणे धो-पोछि कऽ चाटि लइए।

लताम अपन बेथा ऐ दुआरे ने बजै जे मनुक्ख लग बाजी आ ओ आरो विसविसा कऽ धऽ लिअए। तखन तँ जेहो दू-चारि साल जीबै छी जीबै छी। अनेरे किए परान गमाएब। मुदा लतामक मन कलैप-कलैप विवेककेँ कहै-

“पुश्तैनी फल सभ गुण-सम्पन्न छी, मुदा परदेशी सेव केना हमरा समदिया बौहु जकाँ धकेल कऽ निकालि रहल अछि। संस्कार कहिया अण्डा देत।”



शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई- 2015

हरदीक हरदा

भिनसरे करीब साढ़े सात पौने आठ बजेक बीच, बाध-बोन देखि-सुनि घरपर एलौं कि बुझि पड़ल जे पत्नी घरक केबाड़ बन्न कऽ केतौ गेल छैथ। ओना रस्तेमे जखन अबैत रही तँ जेरक-जेर लोककेँ टेम्पूमे सवार धड़फड़ाएल जाइत देखने रहिऐ। मुदा सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, अपन-अपन परिवार छै अपन-अपन कुटुम-समाज छै, सभ अपना-अपना काजे बेहाल अछि। तँए उपकैर कऽ केकरो किए कियो किछु पुछत।

लोकक धड़फड़ी देखि अपनो अन्दाज करैत रही जे भैरसक केतौ किछु भेल अछि। जँ से नइ तँ कोलकाता-मुम्बइ जकाँ सड़क भाड़ी किए अछि? गाम-गामक टेम्पू, गाम-गामक यात्रीकेँ लऽ लऽ उत्तरे मुहेँ जा रहल अछि। एना काल्हि-परसू कहाँ छल?

दरबज्जापर सँ आँगन दिस नहि जा सोझहे गाइक थैर दिस बढ़लौं। दुनू गाए डिरियाइत रहए। बुझि पड़ल जेना गाइक बोली बदलल अछि। होइतो अहिना छै, सोझक डिरियाएब आ परोछक डिरियाएब बदैल जाइ छै। बुझि पड़ल जे पत्नीक अनुपस्थितिक सूचना दऽ रहल अछि। नादिमे घास दैत चोटे घुमि कऽ दरबज्जापर एलौं। आब तँ घरपर छी, मात्र दुनू गाएकेँ आ अपन मन-पेटकेँ शान्त करब अछि। समटले काज भेल। से नइ तँ पहिने गाम दिस टहैल देखिऐ जे की बात छी, एना आन गामक लोक हलचलाएल केतए जा रहल अछि?

गामक हलचल तँ आरो बेसी। धिया-पुतासँ लऽ कऽ नव-नौतारि, बुढ़-पुरान अधिकांश स्त्रीगण पएरो आ टेम्पूओसँ उत्तर मुहेँ जाइत। मनमे भेल जे सौंसे पोखैर जँ टहलबे करब आ नियमसँ घाटपर नइ नहाएब तँ ओ अनेरे ने देहकेँ कठुआएब भेल। तखन तँ भेल जे ओहन कियो भेटैथ जे अपना ढंगे विचारैत होथि।

फेर भेल जे गामो तँ गामे छी, कोनो गाम आन गामक मेह छी तँ कोनो..?

मुदा तइमे गुलाव कक्काक अपन ढंगक विचार छैन जे समैसाध अछि।

आगू बढ़ि गुलाव काका ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जेपर गुलाव काका ठेहुनियाँ गरे दुनू बाँहिकेँ मोड़ि सिरमा बना मुड़ी लटकौने बैसल रहैथ।

फरिकेसँ नजैर पड़िते मनमे उठल जे भैरसक गुलावो काका ने तँ हमरे रोगे पीड़ित छैथ। एक दुखक दुखताह जे दोसरक डॉक्टर बनि जाइ, तँ ओ अपने केना दुखताह भेल। से नइ तँ घुमि जाइ। मुदा जँ कहीं ठेहुनक दोग देने काका देखि नेने होथि आ घुमैत देखता तँ की ओ पाछूसँ टोकारा नइ देता जे हमरा देखिये कऽ डर होइ छह!

कहबो तँ उचिते करता, अपन रोग अपने ने बुझै छी। ओ किआँने गेला, ओ तँ अपनेटा बेथा ने बुझैत हेता।

आगू बढ़लौं, जखन लग्गा भरि पाछूए रही कि मुँह उठा तकलैन। नजैर मिलिते कहलयैन-

“काका, गोड़ लगै छी?”

असीरवाद दैत काका अपने सोझ होइत बजला- “लगेमे बैसह। आब की जोरसँ बजैक समय रहल। दुनू गोरे मुँह-मे-मुँह मिला फुसफुसा कऽ गपो कऽ लेब आ कानमे कान सटा सुनियोँ लेब। भऽ

तँ गेल जे मुँह-कान जँ नीक बनौने रहब तँ केहनो हवा-बिहाड़ि औतै तैयो नीके रहत। सभ जब अपने मने बताह अछि तखन सभ अपन-अपन बतहपनी देखबैत रहह।”

एकसुरे गुलाव काका बाजि गेला। हूँ-हूँ तँ करैत गेलिऐन मुदा नीकसँ सभ बात बुझि नइ रहल छेलौं। मनमे ईहो कछमछी रहए जे लऽ दऽ कऽ दू परानी भेलौं तहूमे घरवाली बोनाएले छैथ। भानसो तँ अपने करए पड़त। मुदा जखन टटका समस्या बुझैले समय नइ लगाएब तखन तँ...। जखन कि गाम-समाज डुमि रहल अछि, भँसि रहल अछि।

फेर ईहो हुअए जे घर-अँगना, दुआर-दरबज्जा सूने अछि आ जँ कहीं सून देखि कुत्ते-बिलाइ आकि साढ़े-पाड़ा आबि उपद्रव करत तखन तँ खुट्टापर दूटा जे लछमीधन अछि, ओ डोरी तोड़ि पड़ाइयो सकैए किने?

विचित्र स्थिति मनमे ठाढ़ भऽ गेल। एक दिस मनरोग दबने रहए दोसर दिस धनरोग। मुदा जी-जाँति, ई सोचि मनकेँ असथिर केलौं जे अधहा-छीदहा बुझि कहबैन जे काका असगरे छी। भानसो करए पड़त आ मालो-जालक सभ नेकरम अपने करऽ पड़त। कहलयैन-

“काका, आइ अपने बेथे बेथाएल छी तँए दुनियाँ-दारीक बेथा सुनैक साहस नै भऽ रहल अछि। ओते दमे ने पाबि रहल छी जे सुनब। तखन तँ भेल जे परोपट्टाक हाल-चाल कनी सुनि ली। से कनी..?”

‘से कनी’ सुनि गुलाव काका बुझि गेला जे भैरसक अपन हाथ-पएर झड़कबै दुआरे अगुताएल अछि। मुदा विचारोकेँ तँ समुद्री जुआर उठै छै, कखनो धरतीपर होइत बहैए तँ कखनो बहैत

अकासमे उठि अन्हर-तूफान, पानि-पाथर सभ बहबैए। ओना अस्सी बर्खक अवस्थामे गुलाव काका ऐगला बीस बर्ख बिसवासक संग जीब रहला अछि। बिसवास ई जे अखन धरि जखन अपना लुरिये-बुधिये जीब लेलौं, कोनो बेमारीकेँ सटि कऽ नइ आबए देलिऐ, तखन ऐगला बीस-बर्खक लेल तँ दवाइयो-दारू सुन्दर-सुन्दर आ बिसवासू-सँ-बिसवासू उपयोगी बनि-बनि ठाढ़े अछि, तखन किए ने बीस बर्ख ओहू बले खेप लेब। गुलाव काका बजला-

“एना झाँपि-तोपि बजने औझुका समयमे जीब हेतह? जे बात करी से सोझ-साझ करी। भानसक चिन्ता छह, सएह ने, हाथो-पएर झड़कौने भरि मन ते खेबे करबह किने?”

गुलाव कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे गुलाव काका ई बात फाजिल बजला। फाजिल ई जे सभ दिन की अधपेटे खाइ छी। मुदा मुहाँ-मुहीं ई कहबो नीक नहि, तँए से नइ कहि ई कहलयैन-

“काका, गुलाबक फूल जकाँ कखन सुगंधक सट्टी-पट्टी दइ छिऐ आ कखन ओकर रंगक आ कखन ओकर चालि मारि दइ छिऐ से बुझिए ने पबै छी?”

हमर बात गुलाव काकाकेँ कठाइन नहि, मीठाइन लगलैन। मीठाइन लगिते मिसरी कहियौ आकि सोहागा जकाँ बतीसी छिटकबैत बजला-

“बौआ, अखन तूँ पचीस बर्खक जवान छह, बाल-बच्चाक बोझ माथपर नइ पड़लह हेन, गामे-समाज, कुटुमे-परिवार ने छी दुनियाँक जाल। अही जालमे रहि जिनगी जीबैक छह। साठि बर्खक अवस्थामे पत्नी मुइला पछाइतो अपन दिन भैरगर कहाँ बुझि पड़ैए। समैकेँ सुभिहस्त भेने आब जिनगी जीबैमे सेहो सुभिस्ता आएल अछि किने।”

नजैर उठा किरिण दिस देखी तँ बुझि पड़ए जे भानसोक बेर उनहल जाइए तैपर सँ मालो-जाल अछि, एम्हर काका तेहेन जालमे ओझरा देलैन जे समैयक कोनो पुछे ने रहल! धड़फड़ाइत कहलयैन-

“काका, अखन एतबे कहू जे लोक सभ केतए भेड़िया-धसान भेल जा रहल अछि?”

मुदा गुलाव काकाकेँ सुतरलैन। सुतरलैन ई जे अपन बेथाक बात काकाकेँ कहि देने छेलिऐन। बजला-

“बोआ, पहिने अपन बात सुनि लएह। कहलियऽ जे भरि मन खेबह। भऽ सकैए जे तोहर मन पत्नीक सिनेहे सिहैर गेल हेतह मुदा काजक जे सीमा अछि ओइ सीमापर बैस जखन खेनाइ बनेबह तखन अपन मननुकूल वस्तुक उपयोग मननुकूल विचारानुसार करबह, जखने मननुकूल वस्तुक मननुकूल उपयोग हएत तखने मन अनुकूल हएत आ जखन अनुकूल मनमे अनुकूल विचार अनुकूल काजमे प्रेरित करतह, तखन अपनाकेँ अनुकूलता बुझबहक।”

गुलाव कक्काक बात सुनि जेना मन भरि गेल। मुदा जे विचार बुझए ऐलौं से रहि गेल बाँकीए! आब की हएत? मनमे ईहो हुअए जे कहीं मरसियाक सुर पकैड़ काका दोसरोकेँ नाँगैर पकड़नहि आगू बढ़ि गेला, तखन तँ आरो भाड़ी पहपैट हएत। अपने भुख लागत तँ हिनकोसँ मांगि कऽ खा लेब मुदा खुट्टापर गाए डिरियाइत हएत। धड़फड़बैत कहलयैन-

“काका, ओते-कालक छुट्टी दिअ जेते-कालमे अपन खेनाइ-पीनाइक संग मालो-जालकेँ खुआ-पीआ दिऐ। फेर ऐगला बात कहब। मुदा जइ काजे एलौं से तँ बाँकीए रहि जाएत तखन तँ मनमे कछमछी लगले रहत।”

गुलाव काकाकेँ फेर सुतरलैन, बजला- “ने रहैले कछमछी

छोड़ै छह आ ने जाइले, तखन तोरे विचारे-विचार।"

मने मन भेल जे एक फाँस बुझए एलौं दोसर महाफाँस चारू दिससँ लगि गेल! मुदा तैयो जी-जाँति बजलौं-

"केतए लोक भेड़िया-धसानमे जा रहल अछि, काका?"

अकाससँ खसैत तीर गुलाव कक्काक मगजकेँ जेना बेधि देलकैन तहिना बेथाएल बोलिये बजला-

"बौआ, दुनियाँमे केकरो कियो ने!"

आगू बजैले कक्काक मन लुसफुसाइते रहैन मुदा ठनका जकाँ अपनो मनमे खसल। माने ई जे गुलाव काका ई की बजला- 'दुनियाँमे केकरो कियो ने?' परोपट्टाक लोक जे उमैड़ कऽ जा रहल अछि से तँ चाहे अपने-ले जा रहल अछि चाहे अपन परिवार-ले आकि समाजेक कल्याण-ले ने। ओहिना थोड़े सभ अपसियाँत अछि। फेर एना किए काका बजला?

मुदा गुलावो काका सात जोजन तक देखनिहार, मुहेँक बीज सँ बुझि गेला। तुष्टियाएल मुस्की दैत कहलैन-

"बौआ, बीस बर्ख पत्नीकेँ परोछ भेना भऽ गेल अछि, परिवारमे चारिटा पुतोहु आ पोता-पोती ढेरी अछि, खेनाइ तँ सहरगंजा बनबे करैए माने सभले बनैए, ओतबे आसा परिवारक अछि। अपन जिनगी अछि। अपन काज अछि, अपना हाथे-पएरे अपन जिनगीक गाड़ीकेँ ससारि रहल छी।"

जहिना कुसमय एने रोग-पर-रोग आ बोखार-पर-बोखार रोगियाहो आ बोखरियाहोकेँ गति दइए तहिना मने-मन होइत रहए। ठीके काका कहलैन, दुनियाँमे केकरो कियो ने!

एक तरफ अपन परिवार दिस देखी तँ अपनो पेटक पूजा आ

मालो-जालक पूजा पछुआइत जाइत देखिऐ आ दोसर दिस तेसर पूजा गुलाव काका पसाइर देलैन। ओह! अपने गल्ती भेल जे अनेरे ऐठाम आबि गेलौं। ने जइतौं ओइ टोल ने सुनितौं ओकर बोल। हरल-मरल बटोही जकाँ कहलयैन-

"काका, भऽ गेल! तीनटा विचारकेँ ललका रोशनाइसँ छेकि दियौ। पहिल भेल 'अहाँक अपन बेथा', दोसर भेल 'हमर कथा' आ तेसर भेल 'भेड़िया धसानक जथा।' फेर काल्हि-परसू कौल्हुका-परसुका घटना-घुटनीक घण्टी बजा पूजा करब।"

अपनाकेँ सीमांकित होइत देखि गुलाव काका गायित्री बन्धन जकाँ अपन विचारकेँ समटैत बजला-

"बौआ, अपन एकटा बात अछि ओ पहिने कहि दइ छिअ। भोरे सुति उठि टहलैले गेल रही तखने परिवारक स्त्रीगणक संग धियो-पुता घरसँ निकैल गेल छेली। आँगन खाली देखि जखन पड़ोसी सभकेँ पुछलिऐ तँ भाँज लगल जे सभ हरदियाही गेल छैथ।"

कहिते कहैत गुलाव काका ठमैक गेला। ठमकैत देखि टोकलयैन-

"काका, एना अँगने-अँगने अँटकब तखन गामसँ निकलल हएत? देखै नइ छिऐ इचना कोनो कि माछ नइ छी मुदा ओकर अँगना-घर रहु-भाकुरक अँगना-घर जकाँ थोड़े हएत।"

हृदय खोलि गुलाव काका बजला-

"बौआ, परिवारमे हम बुढ़ छी, एकोटा चेतन आ अर्ध-चेतनक मनमे ई चेतना कहाँ उठल जे अपने जेतए जाइत हौउ, मुदा जे आश्रित छैथ, हुनको मनमे ने रहब अछि। से किनको मनमे एलिऐन? जँ मन नइ तँ तन फुसि।"

गुलाव कक्काक बेथा सुनि जेना अपन बेथा हल्लुक बुझि

पड़ल। मुदा भेड़िया-धसानक मूल तँ छुटले रहि गेल। कहलयैन-

"काका, जाए दियौ, समुद्रक लहैरमे नाह डगमगाइते छै। पोखरि-झाँखरिमे ने असथिरसँ चलैए।"

हमर बात जेना गुलाव काकाकेँ कण्ठसँ निच्चाँ भेलैन। जखने कण्ठसँ निच्चाँ भेलैन कि बुझि गेलौं जे मुँहक दवाइ पैरक घाओकेँ ठीक करिते अछि। असथिर होइत गुलाव काका बजला-

"ऐ भेड़िया-धसानक पाछू केते रंगक मीडिया काज कऽ रहल अछि। अन्तर्राष्ट्रीयसँ लऽ कऽ राष्ट्रीय समाज धरि। खएर अखैन ओ सभ नहि।"

जखने काका बजला जे 'अखन ओ सभ नहि' आकि अपनो मन फुल-फुलाएल। हुँहकारी भरैत कहलयैन-

"हँ-हँ अनेरे आलतू-फालतू बोन-झाड़मे लटकैत चलब तँ गामोक सीमा नइ टपि सकब।"

गुलाव काका बजला-

"हरदियाहीमे एकटा पचीस बर्खक विधवाकेँ सपनौती भेल जे हुनकर डीहक माटिमे ओहन शक्ति छैन जे जेकरा देहमे भीरत आकि सटत तँ ओकर सभटा कष्ट दूर भऽ जेतइ। सवारीबला सभ भिन्ने प्रचार केलक, वेपारी सभ भिन्ने केलक, अपन क्षेत्रक आमदनी देखि अपना-अपनीकेँ तेना ने सभ प्रचार कऽ देलक जे लाखक-लाख आदमी अबै-जाइए। बात की? हएत की तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा पाइयोक बरखा तँ भइये रहल अछि। समैयोक लूट भइये रहल अछि। "

अपनो भूख जगल, कहलयैन-

"काका, अखैन जाइ छी, ओना एकठाम दुनू गोरे बैस किछु

विचार करितौं तँ बेसी नीक होइत, मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी जेकर भार अपनो अछिए। ओ भार तँ सभकेँ लाइए कऽ चलए पड़ैत अछि। माल-जाल डिरियाइत हएत...।”

ओना गुलाव कक्काक परिवार सोलहन्नी नोकरिया परिवार जकाँ नइ, जे ताला लगा दियौ, हेण्ड-बैग हाथमे लिअ आ गाड़ी कि बस पकैड़ टहैल जाउ!

किसान परिवारसँ जुड़ल परिवार रहने हजारो रंगक काज परिवारक सभ अपने कन्हेठ जिनगीक गाड़ीकेँ कखनो आगूक मुँहरा पकैड़ तँ कखनो पाछूसँ पछूआ पकैड़ ठेलैत चलिते अछि। ओना गुलावो कक्काक परिवारमे किछु एहेन काज छेलैन जे करब अनिवार्य रहैन। मुदा एकबोलिया लोक गुलाव काका, एके बोले निर्णय कऽ नेने रहैथ जे जएह गति हमर सएह गति सबहक हेतइ। तँए काजे छोड़ि खिसिया कऽ दरबज्जापर बैस अनसन लधने छैथ।

मुदा अपना तँ से नै अछि, अप्पन जुतिक काज अछि, जँ कोनो बाधा उपस्थित हएत तँ ओकरा देखब अपन भार भेल किने। तखन खेनाइ बनाएब काज बढ़ल। तँए समैकेँ पकैड़ नइ दौगब तँ काज छुटि जाएत। पेट नइ भरब, से नइ बनत। जखन पेट खाली रहत तखन ओइ काजक भार केना उठा सकै छी..?

विचारक ऐ सीमापर आबि अँटैक गेलौं, मालो-जालकेँ आ अपन भानसो-भात सम्हारब अछि।

भानसक बेर लहैस रहल छल। गाम-घरक भानस एक उखड़ाहाक होइए। तहूमे नमहर परिवार रहह आकि छोट, ओते विध-बेवहार तँ पुरबै पड़त...।

झटकल घरपर आबि चुल्हिक ओरियानमे लगि गेलौं। सभ समान चुल्हि लग रखि मसल्लाक चङेरी आनए गेलौं कि हरदीकेँ

भाषण करैत सुनलौं। मन ठमैक गेल। एक मन हुअए जे चङेरीए उठा चुल्हि लग रखि दिऐ, जे चुल्हिक काजो करब आ हरदीक भाषणो सुनब।

फेर भेल जे जँ कहीं चङेरी छूअब आ गनगुआरि जकाँ मुँह-नाँगैर सभ एकबट्ट कऽ लेत, तखन की सुनब? मन अग-दिगमे पड़ि गेल। अन्तिम विचार यएह भेल जे हरदी केतेकाल भाषणे देत। ओना चङेरीमे हरदीक संग मिरचाइ, धनियाँ, तेजपात आ नून सेहो छल। पाँचोक बीच हरदी बाजल-

“भाय, आब ऐ दुनियाँमे जीब कठिन भऽ गेल अछि। हमरेटा नइ तोरो सभकेँ।”

हरदीक उदारवादी विचार सुनि मिरचाइ कहलकै-

“हरदी भाय, अनकर ठेकान तँ नइ बुझै छी, समय पाबि धनियाँ धनिको भऽ जाइए मुदा अहाँ भेलौं कि हम आकि नून भेल, तीनू गोटे तँ सभ दिनसँ एकठाम छी।”

मिरचाइक बात सुनि हरदी मने-मन सोचलक जे मिरचाइ बुधियारी मारए चाहैए। कहू जे हम अपन जन्मभूमिपर छी, जन्मस्थानपर छी, ओना मिरचाइयो अछि मुदा नूनकेँ किए सानि लेलक? दुनूक चलाकी छी, दुनू मिलि मरूआ रोटीक संग चलि जाएत हमरा छोड़ि देत।

फेर हरदीक मनमे उठल- एना जे एकटाकेँ दुसब आ दोसरकेँ पुछब से नीक नहि हएत। तँए सबहक बीच किए ने एक राय बना विचारि लेब।

डिब्बाक भीतरसँ धनियाँ बाजल-

“भाय हरदी, पहिने अपन बात बाजह जे आगू दिन-ले की दुख भऽ रहल छह।”

धनियाँक बात सुनि हरदीक मनमे ओहन आस जगल जे बेटी बिआहक देल सहयोगक तगेदा ई कहि करैत जे हुअए तँ देब नइ तँ नहि देब। सोल्होअना कहब जे नइ देब। रीन लादब भेल। ओ देनिहार–माने आपस केनिहार–समैनुकूल निर्णय करता। लोको तँ लोक छी, धन देखि धनमन्त कहि असीरवाद दइए जे पाँच पुरुखा तकक लेल अरजि देलिऐ, ने घरक दुख आ ने खाइ-पीबै आ ऐश-मौज करैक दुख बाल-बच्चाकेँ हुअ देब। मुदा ई थोड़े ओही मुहेँ कहत जे पैछला पुरुखाक जे ढेरीपर बैसल छी, से भेल केना। अहाँले अहाँक पिता आकि बाबा की सभ आ केना केलैन।

मने-मन हरदी गमलक जे बाते-बातमे विवाद भऽ जाएत, काजो रहि जाएत कातेमे आ जिनगियो चलि जाएत खत्तेमे। से नै तँ पहिने अपन बेथा कहि देब नीक रहत। जँ कियो दुख देखि-सुनि दुखी भेल आ दुर्दिन-ले दोस भेल सेहो बड़बढ़ियाँ नइ तँ अढ़ाइ हाथ सभपर छै, अपन-अपन बुझि लेत। बाजल-

“भाय-बन्धु, जे जनमभूमि सभ दिनसँ अपन रहल, बाप-दादाक तपोभूमि रहलैन, जे अपन देह गला-गला बलिवेदीपर चढ़ि एक दिस पुन-परताप करैत आएल छैथ तँ दोसर दिस जनमभूमिमे नव सृजनक सहयोगी माँ जननीक रहलैन, तैठाम ‘पेटेन्ट’ कहि पट्टा बनबए चाहैए?”

हरदीक बात सुनि बिच्चेमे खड़खड़ाइत तेजपात बाजल-

“ऐ भाय! एहेन अन्हेर?”

तेजपातक प्रवाहमे बहैत हरदी बाजल-

“भाय, अन्हेरे किए कहै छहक, इन्होर आ अन्हार किए ने कहै छहक?”

मिरचाइ टोनियबैत बाजल- “भाय, जखन अपन दुखनामा

बजै छह ते एकहरफी बजैत चलह। बीचमे भौक-भाक हेतह ते महाभारतक साएम श्लोक जकाँ भऽ जेतह।”

मिरचाइक बात सुनि हरदीक मनमे बिसवास जगल जे सभसँ लगमे सुनिनिहार मिरचाइ अछि। वेचारा सजमैन सन तरकारीमे बिनु तेलोक संग पुरैए। एहेन संगीकेँ संगे लऽ चलब नीक हएत। मुदा संगी जे संगबे हएत तइले ते नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला बात-विचारक सम्बन्ध नइ राखब तँ ओ रस्तेमे थुसकुनियाँ मारि देत किने...।

बाजल-

“भाय मिरचाइ, भलेँ तोहर गुण लोक ओहन बुझौथ जे अधिकतर संगी सभसँ फुट छह, माने सुआदक नजरिये, मुदा संगी नइ छहक सेहो बात नहियेँ अछि। लाल मिरचाइक संग कारी मिरचाइ सेहो अछिए। भलेँ तूँ अपना पएरे धरतीपर ठाढ़ भऽ फुलाइत-फड़ैत अपन कल्याण करै छह आ करिया मिरचाइ अनका पएरे अनका सिरपर चढ़ि कऽ कल्याण करैए। सएह ने?”

अपन परिवार दिस बातकेँ अबैत देखि मिरचाइ बाजल-

“भाय हरदी, सभ अपना-अपना मुहेँ अपन-अपन बात बाजह, नइ तँ गड़बड़ भऽ जेतह। मोटका चाउरमे महिक्का जेना नुका रहैए तहिना हेतह।”

अह्लादित होइत हरदी बाजल-

“भाय मिरचाइ, की अपन बात कहबह, बहरबैया जे सेखी उतारैले उताहुल अछि से तँ ऐछे, घरबैयो सभ कम खचड़ै नइ ने करैए।”

‘खचड़ै’ सुनि तेजपातक मनमे उठल, भाय घरबैयाक जखन एहेन दुर्दसा छै तखन हम तँ सहजे बहरबैया भेलौं। मुदा केतबो

बहरबैया छी, तँ लोक अपना छातीपर हाथ रखि बाजह जे पुश्त-पुश्ताइनसँ संगे सभ मिलि-जुलि रहैत एलौं हेन की नहि? बाजल-

"भाय, की खचड़ै कहलहक?"

जहिना केकरो बेथा सुनिनिहार भेटने मनमे सुआस जगै छै तहिना हरदियोकेँ जगलै। बेथित होइत तेजपातकेँ कहलक- "भाय तेजू, की कहबह अपन मनक हाल, तेहेन खच्चड़क शिरोमणि सभ भऽ गेल अछि जे अधपक्कू ईटाकेँ पीस लइए तइमे कनी केमिकल मिलौल पीअरका रंग फेँट कऽ बीच बजारमे पटैक हमरा बेइज्जत करैए।"

दुनू हाथसँ धनियाँ सभकेँ शान्त करैत बाजल-

"भाय, हमहूँ जनमडीही छी, एकर माने ई नइ जे ओ आन भेला। जँ बहरबैयो छैथ आ गंगा-सागर जाइले संगी छैथ, तखन जँ कोनो मनमे कुवाथ अनै छी से नीक नहि। सभ संगी छी, सभ दिन जहिना बाप-दादाक अमलदारीसँ रहलौं तहिना आगूओ रहब।"

मिरचाइ अपन विचार देलकै-

"देखह भाय हरदी, केतबो कियो तोरा आगूसँ आकि पाछूसँ धकलै छह तँ की तूँ धकिया जाइ छह, तइले अपन दिन-दुनियाँ ने देखए पड़तह। अखन बस एतबे करह जे सभ अपन-अपन चिन्हा-परिचय, गुण-अवगुण अपना मुहेँ कहि कऽ आइए अपन-अपन छान-बान दुरुस कऽ लएह। पछाइत सब संगी भेलौं, संगे चलब, बस एतबेसँ सबहक काज चलैत रहत।"

पाछू घुसकैत नून बाजल-

"भाय, सभकेँ बाप-दादाक ठेकान, खाता-खेसरा आ जमीन छै, हमरा ते किछु ने अछि। कखनो समुद्रक पानिमे दहा जाइ छी, तँ कखनो सिंध नदी होइत सिंध पहाड़मे घोंसिया जाइ छी। कखनो

उस्सर-खासरक टोपी बनि माटिमे फुला जाइ छी। के एते मुइलहा बाप-दादाक खतियान ताकत। लूटि लाउ कूटि खाउ भिनसर भने फेर जाउ। भाय, हमरा विषयमे जे जेते जनै छह, हम एतबे कहबह।”

नूनक दुखनामा सुनि तेजपात बाजल- “भाय, हमहूँ सभ मिथिले-वासी छी। तखन तँ सभ दिनसँ पहाड़पर बसैत एलौं, तँए अखनो बसै छी, मुदा पहड़नियोँ बनि तोरा सबहक संग कहियो छोड़लियह हेन।”

मसल्लाक चँगेरी उठा चुल्हि लग एलौं कि तीने कोसक जतरा; पत्नियोँ आबि गेली। अबिते धड़फड़ाइत बजली-

“आइ बुढ़ियाक मनोरथ पूर भऽ गेलै।”

पत्नीक बातक कोनो अरथे ने लगल, एक तँ ओहुना लोक किछु नव चीज देखि-सुनि अबैए तँ बजैक हुल्लास रहिते छै, पत्नियोँकेँ तहिना रहैन। टोनि देलिऐन- “कोन बुढ़ियाक मनोरथ पूर भेलैन।”

अह्लादित होइत पत्नी बजली- “अपने दुनू गोरेले दादी समाद पठौने छेली जे नीर लऽ जाइ-जाउ,।”

बाजि कऽ नोराएल आँखिकेँ पोछए लगली। भानसक बेर उन्हैत देखि मनमे भेल, अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ल रहब, चड़ियबैत पत्नीकेँ कहलयैन-

“अहाँक पेट ने नीरे भरत मुदा हमर तँ भरत क्षीरे किने। होउ झब-दे भानस करू, नहेने अबै छी।”



शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई- 2015

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
